भगवान 'वीरभद्र' देवाधिदेव भगवान शिव के एक अद्भुत एवं अनुठे एक मात्र ऐसे शिव गण हुए जो साक्षात रूद्र अवतार माने जाते हैं। जब भगवान शिव को माता सती के देह त्याग का पता चला तो वे अति क्रुद्ध हो उठे, उसी क्रोद्ध में उन्होंने अपनी एक जटा उखाड़ कर पृथ्वी पर दे पटकी फलस्वरूप उत्तर दिशा से विकरालरूप धारण कर के वीरभद्र प्रकट हुए। वह भगवान शिव के समक्ष हाथ जोड़कर खड़े हो गये, शिव ने दक्ष यज्ञ को विद्धवंस करने का आदेश दिया।

संसार भर में मात्र दो या तीन स्थलों पर भगवान वीरभद्र के मन्दिरों का विवरण मिलता है जिनमें **मल्लिकार्जुन स्थित श्रीसेलम ज्योतिलिंग तथा महाकालेश्वर मन्दिर उज्जैन** में श्री गनेश जी प्रतिमा के साथ गर्भ ग्रह से पहले भगवान वीरभद्र की मूर्ति है। जहाँ श्राद्धालु उन्हें कान में बताकर अपनी मुँह माँगी मुरादें पूरी करते हैं।

जम्मु क्षेत्र के राजौरी जनपथ में पौराणिक काल से निर्मित यह विश्व का एक मात्र सबसे बड़ा मन्दिर है, जो वीरभद्रेश्वर के नाम से जाना जाता है। वीरभद्रेश्वर की महिमा को अपने शब्दों में वर्णन करने का लेखक द्वारा एक तुच्छ प्रयास किया गया है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि भगवान वीरभद्र इसके समस्त पाठकों का सदा कल्याण करेंगें। क्यों कि इस घोर कलयुग में शिवगण का यही रूप सहज प्रसन्न हो जाता है। यहाँ कम से कम समय बैठ कर आराधना करने से व घण्टी वाधने से भगवान शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। अतः यह मन्दिर घण्टियों वाले मन्दिर से भी जाना जाता है।

वीरभद्रेश्वर महिमा

एवं वरिष्ठ पूजा संग्रह

वीर भद्रेश्वर मन्दिर - डूंगी
(राजौरी- जम्मू)

लेखक

विध्या सागर शर्मा

एम० एस० सी०, एम० एड० (शिमला विश्वविद्यालय)

डी० बी० एम०

समस्ता पब्लिकेशनस् (रजि०)

जम्मू-२

वीरभद्रेश्वर महिमा

एवं वरिष्ठ पूजा संग्रह

वीर भद्रेश्वर मन्दिर - डूंगी

(राजौरी- जम्मू)

VIR-BHDRESHWAR MANDIR

DOONGI-RAJAURI

लेखक

विध्या सागर शर्मा

पब्लिकेशन्स

समस्ता पब्लिकेशन्स

३१४/१४ हजूरी बाग

बोड़ी जम्मू-१८०००२

संस्करण

प्रथम संकलन २००८

मूल्य

75 रू० मात्र

लेजर कम्पोजिंग एवं प्रिंटिंग

रामा प्रिंटर्स

न्यू दिल्ली-११०००२

समर्पण

परम पूज्ये गुरुदेव, ब्रह्मऋर्षि

बाबा दूधाधारी जी महाराज,

सन्त शिरोमनी

सन्त प्रभुदास जी महाराज

'हरिद्वार'

तथा भगवान वीर-भद्रेश्वर

के प्रति आस्था रखने

वाले समस्त श्रद्धालु वृंद

के लिए

समर्पित

विषय सूची

'पूर्व कथन'

समूचे जम्मू-कश्मीर राज्य, को असंख्य तीर्थों का समूह, भारत की **मुकुटमनी** कहलाया जाने वाला **तीर्थों का तीर्थ,** ऋषियों-मुनियों की **तपोस्थली,** ***पृथ्वी पर स्वर्ग*** एवं ***जन्नत-ए-वेनज़ीर*** जैसी अनेक संज्ञाओं से सम्बोधित किया जाता है । जहाँ *नीलमत पुराण* में कश्मीर को **भगवती कश्मीरा** का साक्षात रूप माना गया है । वहीं इसी नीलमत पुराण में कश्मीर को ***वितस्ता, उमा, विशोका*** *(वेश्व)* ***माँ क्षीर-भवानी*** तथा *लक्ष्मी* का साकार रूप माना गया है ।

महाकवि **कालीदास** ने तो **हिमालय** को **देवात्मा** अर्थात् दिव्य आत्माओं की निवास-स्थली माना है तथा उसकी समस्त चोटियों व उनकी उपत्यिकाओं में अनेक ऋषियों-मुनियों' ने कठिन तपस्याएं कीं तथा मुक्ति को प्राप्त हुए ।

उतराँचल में जहाँ *हरिद्वार, ऋषिकेश, केदारनाथ, बद्रीनाथ* आदि तीर्थ-स्थल हैं, वहीं भारत का शीर्ष-प्रदेश कहलाए जाने वाले जम्मू कश्मीर के सुदूर उतर-पूर्व में हिन्दुओं का सर्वोच्च तीर्थ-स्थल **कैलाश-मानसरोवर,** कश्मीर में **बाबा अमरनाथ** जी की गुफा, माता **क्षीर-भवानी, शंकराचार्य का मन्दिर, चरारे शरीफ** जैसे अनेक तीर्थ-स्थल हैं, वहीं जम्मु को भी वेदों पुराणों एवं विभिन्न ग्रन्थों में **जम्मू-द्वीप** की संज्ञा दी गई है ।

''जम्बू द्वीपे भारत खण्डे, आर्य वर्तक क्षेत्रे ॥''

इस श्लोक ने जम्मू की अध्यात्मिक महत्ता को प्रमाणित किया है । जम्मू के अंतरगत तीर्थ-स्थलों में विश्व प्रसिद्ध ३३ करोड़ देवी-देवताओं वाला ''रघुनाथ जी का मन्दिर'', **रण्वीरेश्वर** शिव-मन्दिर, **बाहुवे** में **काली माता का मन्दिर, पीर-खोह, मोहमाया माता** का

मन्दिर तथा **जम्मू से मात्र ४८ कि.मी.** की दूरी पर कटड़ा के निकट शिवालिक पर्वत-श्रृंखला के मध्य त्रिकुटा पर्वत की चोटी पर स्थित पिण्डी रूप में विराजमान **माता वैष्णो** देवी जी की पवित्र गुफा, **चनैनी** (मानतलाई) के निकट सुद्धमहादेव का प्राचीन मंदिर परिसर । साँबा में **चीची माता** का मंदिर, बिलावर में **सुकराला माता,** जिला डोडा स्थित मचेल में **चण्डी माता** का भव्य तीर्थ, **भद्रवाह** के निकट **कैलाश-कुण्ड,** पुँछ में **बुड्डे अमरनाथ जी** व **गुरुद्वारा नंगाली साहब** आदि उल्लेखनीय हैं। जिला राजौरी के ऐतिहासिक स्थलों जैसे डण्नीधार का किला, **चिंगस** का किला, **पंजनाड़ा** में पाँडवों का मन्दिर, **कालाकोट में 'मनमा माता' की गुफा,** थन्ना मण्डी के निकट **शाहदरा-शरीफ,** **चन्नी** (सुन्दरबनी) का एतिहासिक **रघुनाथ मन्दिर,** नौशहरा में **मंगला देवी** किला, पाँच गुफाओं वाला **मंगला माता** का शक्ति स्थल एवं **वीर-भद्रेश्वर शिव गण** की **विश्राम स्थली** अति उल्लेखनीय है । आप के कर कमलों में सुशोभित इस लघु पुस्तिका द्वारा इसी विचित्र, दुर्लभ, शाँत एवं अदभुत-अध्यात्मिक स्थली का संक्षिप्त विवरण देने का एक तुच्छ प्रयास किया गया है । जो इस प्रत्यक्ष तीर्थ-स्थल पर बार-बार जाकर स्वयं अनुभव कर अनेक महात्माओं तथा यहाँ के स्थानीय श्रद्धालुओं से भेंट वारता के फलस्वरूप इस लघु कथा द्वारा वीर-भद्रेश्वर शिव-गण की महिमा का गुणगान करने के उद्देश्य से इसे प्रकाशित करवाने का प्रयास किया है । आशा है कि आप को अच्छी लगेगी । साथ ही भाग दो में छोटे-छोटे मन्त्रों की सहायता से कुछ संक्षिप्त एवं प्रत्यक्ष-प्रमाणित अभ्यासों का भी उल्लेख किया है । लेखन में अनेक त्रुटियों के लिए क्षमा याचना करते हुए, मैं उन सभी सम्बन्धित व्यक्तियों का

जिनकी मद्द से मैं इस पुस्तिका को लिख पाने में सफल हुआ, का तयदिल से आभार प्रकट करता हूँ । पाक अधिकृत कश्मीर के बार्डर के साथ सटा यह मन्दिर शिवालिक पर्वत श्रृंखला के पश्चिमी छोर पर वीरभद्रेश्वर नामी चोटी पर स्थित है। वीरभद्र, 'महावीर हनुमान' की तरह अथाह शक्ति शाली एवं प्रत्यक्ष देवता माना जाता है। मैं इस पुस्तिका को सम्पन्न करवाने वाले सभी सज्जनों, महानुभावों जैसे श्री कृष्णलाल सूदन (प्रधानाचार्य), श्री भोलाराम शर्मा (मुख्याध्यापक), श्री विश्वामित्र व श्री अशोक कुमार एवं श्री तिल्कराज शर्मा एसिस्टेन्टस,पं० सुरेश कुमार जी, श्री यशपाल जी सरसोनिया (ज्योतिषाचार्य), श्री सुनील कुमार शर्मा जी एवं अविनाश कुमार मिश्रा जी का अभारी हूँ। अन्त में हमारे सुपुत्र धीरज शर्मा व इजी० प्रशान्त सागर का भी धन्यवादी हूँ जिन्होंने मेरी सहायता की है। अन्त्तोगत्वा मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमति स्वर्ण कान्ता शर्मा का आभार प्रकट करता हुँ जिन्होंने इस पुस्तक के कम्प्यूटरीकरन में मेरी सहायता की है । जिस के बिना मेरा प्रत्येक प्रयास निरर्थक हो कर रह जाता। अन्त में इन शब्दों के साथे मै आपसे विदा लेता हूँ।

''तू शाही है परवाज है काम तेरा, तेरे सामने आसमान और भी हैं।
इसी रोज़े-शव में उलझकर न रहना, तेरे सामने इम्तिहान और भी हैं।''

जून २००८

विध्या सागर शर्मा
प्राधानाचार्य
३१४/१४हजूरी बाग,
बोड़ी (जम्मू)
E-mail-vidhyasagarsharma@rediffmail.com
erprashantsagar@gmail.com

भाग - एक

वीर-भद्रेश्वर महिमा

वीर-भद्रेश्वर-मन्दिर डूंगी *'राजौरी'*

''जम्मू-कश्मीर का एक मात्र शांत, अद्‌भुत, एवं अति विचित्र तीर्थ स्थल''

पौराणिक तथ्यः- शिव-महापुराण के अनुसार वीर-भद्रेश्वर की उत्पति की कथा देवादि देव भगवान शिव तथा राजा दक्ष की पुत्री माता सति के साथ जुड़ी हुई है। जिन का शास्त्रों मे अनेक स्थानों से प्रसांगिक प्रमाण मिलता है।

ॐ भद्रंकर्णोभिः श्रणुयाम देवा,
भद्रं पृयेमाक्षभिर्यः जत्राः ।
स्थिरै रंगेस्तुष्टुवाँ सरतनूभिर्व्य,
शेमहि देवहितं यदायुः ॥१॥
ॐ भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः

सुभगं भद्रो अध्वरः भद्रा उत प्रशस्तयः ॥२॥

अर्थात्: हे मानव अग्नि की तरह रोष (गुस्सा) मत करो । जो मानव संतुलित रहता है वही अच्छा (सुभग) पुरुष है और वह सभी पुरुषों में प्रशंसनीय होता हैं । विशेषतया महान पुरुष को न अधिक शान्त रहना चाहिए और न अधिक आग बबूला होना चाहिए । अर्थात् अपने मन मस्तिष्क (दिमाग) को संतुलन में रखना चाहिए ।

उल्लेखनीय है कि माता सति के पिता **राजा दक्ष** ने **कनखल** तीर्थ हरिद्वार में विशाल यज्ञ का आयोजन किया जिसमें भगवान ब्रम्हा तथा विष्णु सहित संसार के सभी देवी-देवताओं को आमंत्रित किया परन्तु अपने जामाता देवादि देव भगवान शिव को किसी पूर्व प्रासंगिक कारण उस अश्वमेधयज्ञ के लिए निमंत्रण नहीं भेजा। माता सति से अपने पति का यह अपमान सहन नहीं हुआ और उसने अपने आप को राजा दक्ष द्वारा आयोजित उस हवन कुण्ड की अग्नि के हवाले कर मृत्यु को प्राप्त हो गई।

वीर भद्र का प्राकटय एवं दक्ष-यज्ञ-विध्वंस

माता सती के अग्नी प्रवेश का दुखःद समाचार जब कैलाश पर्वत पर ध्यानास्थ भगवान शिव को मिला तो वह क्रोधित हो उठे लोक संहारी रूद्र ने अपने सिर से एक जटा उखाड़ कर धरती पर दे पटकी। उस जटा के दो टुकड़े हो गये तथा महांभयंकर शब्द हुआ। कहा जाता है कि उसी जटा के उत्तरी किनारे से अति क्रुद्ध रुद्र-रूप **वीर-भद्र** प्रकट हुए और दक्षिणी किनारे से **माता भद्रकाली** का अवतार हुआ।

वीर भद्र ने भगवान शिव को प्रणाम करके कहा

वीर-भद्रेश्वर ने दोनों हाथ जोड़ कर भगवान शिव से आदेश माँगा और कहा 'हे महारूद्र! मुझे शीघ्र

आज्ञा दें इस समय मुझे कौन सा कार्य करना होगा। आपकी कृपा से मै आधे ही क्षण में सारे समुद्र को सूखा सकता हूँ तथा सम्पूर्ण पर्वतों को पीस सकता हूह महेश्वर मै एक ही क्षण में सारे ब्रह्मण्ड को जला कर भस्म कर सकता हूँ। प्रभो मेरे अन्दर जो शक्ति है यह आपकी कृपा से प्राप्त हुई है अतः आप मुझे शीघ्र आदेशदें'।

भगवान शिव ने कहाः-

'वीर भद्र! ब्रम्हा जी का पुत्र दक्ष बड़ा ही दुष्ट हो चुका है। उस मूर्ख को बहुत घमण्ड हो गया है। तुम उसके यज्ञ का विध्वंस करके उसमें भाग लेने वाले सभी लोगों को यथोचित दण्ड दो शीघ्र मेरे पास लौट आओ यदि कोई तुम्हारा विरोध करे तो उसे जला कर भष्म कर दो और यज्ञ कलश के सारे जल को पी जाना।

अतः अपने स्वामी भगवान शिव के आदेशानुसार वीर भद्र समस्त शिव गणों के साथ दक्ष यज्ञ में पहुचे वहाँ उपस्तिथ देव गणों को अपने तीखे बाणों की चोट से घायल करने लगे जिससे समस्त देवता इधर-उधर दशों दिशाओं मे भागने लगे। इस भयंकर रूद्र रूप को देखकर सभी देवता भयभीत हो गये उन्होंने कई मुनियों तथा देवताओं के अंग-भंग कर दिये प्रतापी वीर भद्र ने भृगु को उठा कर पटक दिया तथा उनकी दाड़ी मूंछ नोच ली। उन्होंने पूषाके दाँत उखाड़ लिए क्यों कि दक्ष महादेव को गालियाँ दे रहे थे तब पूषा दाँत दिखाकर हँस रहे थे। नन्दी ने रोष पूर्वक भग को पृथ्वी पर पटक दिया व उनकी आँखें फोड़ दी। दक्ष भय के मारे भीतर छिप गये। भीर भद्र ने उनको घसीटकर बाहर लाया व दक्ष का शिर काट कर धड़ से अलग कर दिया और वह हवन कुण्ड में गिर कर भस्म हो

गया। इसी बीच भगवान शिव भी वहाँ आ पहुँचे सभी देवताओं के अनुरोध पर दक्ष को जीवित करने के उद्देश्य से भगवान शिव ने बकरे का सर काट कर दक्ष को लगा दिया तब वे बम-बम......शब्द पुकारने लगे। तब ब्रह्मा जी ने उनकी वानी को ठीक किया। राजा दक्ष को अपने किये पर बहुत पछतावा हुआ। तब वीरभद्र ने वायु मार्ग से कैलाश की ओर प्रस्थान किया। यह एक स्थानीय मान्यता है कि रास्ते में थकान के कारणवश हिमालय की उत्तर-पश्चिमी तराई भाग की इस चोटी पर कुछ काल के लिए **वीरभद्र** ने विश्राम किया । तत्क्षण इस स्थान पर एक बहुत विशाल शिला को मंदिर का सा आकार देकर समर्पित किया और कुछ देर यहां विश्राम कर अपने आराध्य देव **भगवान शिव** का ध्यान किया । इसके बाद समय-२ पर अनेक साधु-संत वन विचरन करते-२ इस मंदिर रुपी मठ में आते और ध्यान तथा योग विद्या का अभ्यास करते रहे। कईयों ने तो सारा- सारा जीवन यहीं बिता दिया।

एक अन्य मान्यता अनुसार पांडवों ने भी अपनी हिमालय यात्रा के दौरान इस शिला रुपी मंदिर का निर्माण एक ही रात्री में कर दिया । (भगवान शिव दारा दक्ष यज्ञ को पूर्ण करवाने का प्रसंग पृष्ठ सं० ६१ पर देखें)

ऐतिहासिक तथ्य :- वीर-भद्रेश्वर मठ के निर्माण के पौराणिक इतिहास के साथ-२ करीब २१०० वर्ष पुराना अर्थात् सन 141 ई. का कनिष्क काल का ऐतिहासिक तथ्य यहां के शिलालेखों से प्रमाणित होता है । पेशावर (पंजाव) से कश्मीर तक कनिष्क काल में अनेक मंदिरों तथा बौद्ध मठों का निर्माण हुआ है । ***कंसपुरा*** (कश्मीर) स्थित हारवन बाग के निकट ***कुण्डल-वन*** में कनिष्क

काल के समय एक विशाल अध्यात्मिक सभा का आयोजन हुआ जिस में करीब ५०० भिक्षुओं ने भाग लिया । इस में बौद्ध मत दो भागों में बंट गया । एक हीनयान मत और दूसरा महायान मत हुआ। हीनयान मूर्ति पूजा के विरुद्ध था । परन्तु महायान मत के अनुयाइओं ने अनेक बौद्ध-मंदिर तथा भवन बनवाए और वहां पूजा प्रारम्भ करवाई । कनिष्क *बिन्दुसार* के पुत्र ***सम्राट अशोक*** के बाद के काल में बौद्ध मत का अनुयायी बना । यह महांयान मत से सम्बन्ध रखता था। महांयान मत के लोग बौद्ध को देवता का स्थान देते थे और देवताओं की पूजा करते थे । यह 'पाली' भाषा के स्थान पर संस्कृत भाषा का अधिक प्रयोग करने लगे । कनिष्क को कला एंव साहित्य में बहुत रुची थी । इन के काल में साहित्य में आयुर्वेद के प्रसिद्ध विद्वान **चरक** हुए जिन्होंने **चरक-सहिता** लिखी। उसी काल के अन्य, सुप्रसिद्ध लेखक **नागाअर्जुन अश्वघोष** तथा **वसुमित्र** हुए । अश्वघोष ने **बौद्ध-चरित्र** के कई अन्य ग्रंन्थ भी लिखे । कला के क्षेत्र में भी कनिष्क की बड़ी अधिक रुचि रही जिसकी जीती जागती मिसाल कश्मीर में अनेक मूर्तियों तथा कलाकृतियों से प्रकट होती है । जिन में **राजौरी का वीर-भद्रेश्वर मठ** एवं मंदिर परिसर तथा कनिष्क की अपनी राजधानी **पुष्पपुरा-(पेशावर)** में ४०० फुट ऊँचा एक स्मारक अति उल्लेखनीय है जिस के नीचे बौद्ध के कई विशेष चिन्ह आज भी देखने को मिलते हैं । इसके अतिरिक्त **कन्धार-(अफगानिस्तान)** में बौद्ध की अनेकों विशाल प्रतिमाएं बनवाई जिनमें से कुछ एक का बिध्वंस पिछले कुछ एक वर्षों में तालिबान कटरपंथियों ने किया है। एक लोक श्रुति के अनुसार इन विश्व स्तरीय आध्यात्मिक स्थलों को क्षति पहुँचाने के फलस्वरूप

अफगानिस्तान में जान और माल व राजनीतिक उथल पथल का सामना करना पड़ा है।

320 ए.डी. से 540ए.डी.तक का इतिहास :- वीर-भद्रेश्वर-मठ में कनिष्क काल के बाद ३२० से ५४० ई. तक गुप्त एवं हूण जाती के अनेक हिन्दू सन्तों एवं महन्तों नें इस मठ में तथा इस के आस पास के

अनेक स्थलों पर अपना अधिकतर समय विताया जिन में **नौशहरा स्थित मंगला माता** का गुफानुमा मंन्दिर, **मंगलादेवी** का किला, वीर भद्रेश्वर के ठीक पश्चिम दिशा में पाक अधिकृत कब्जे बाले **खुईरट्टा** में **माता-रंजोती का मठ** तथा इसी दिशा में थोड़ा और आगे **बाण-गंगा** की चोटी पर स्थित **बाण-गंगा आश्रम** अति उल्लेखनीय है । कहा जाता है कि हूण जाती के लोग महायानियों से ही परिवर्तित हुए और इन्होंने अनेक बौद्ध मंदिरों को गिरवा कर हिन्दू धर्म के मंन्दिरों में परिवर्तित किया । जिन का प्रमाण **वीर-भद्रेश्वर** में मिलता है ।

अवस्थिति:- वीर-भद्रेश्वर मठ जम्मू-कश्मीर राज्य के राजौरी जनपद के अंन्तर्गत समुद्र तल से ६५७० फुट की ऊँचाई पर स्थित है । यह मठ राजौरी से करीब ६० कि.मी. की दूरी पर, अथवा जम्मू-काश्मीर की **शीत कालीन राजधानी** जम्मू से १८० कि.मी. की दूरी पर एक ऊँची अति प्राकृतिक एवं सुन्दर पर्वत श्रृंखला पर स्थित है । जम्मू से राजौरी अथवा पुंछ की ओर जाते हुए लगभग १०० कि.मी. की दूरी पर **चिंगस** गांव में मुगल सम्राट **जहांगीर** का एक स्मारक तथा सराय आती है, इस के ठीक १० कि.मी. आगे चलकर कल्लर से एक सड़क मार्ग पश्चिम की ओर निकलता है । ४५

कि.मी. का पर्वतीय मार्ग ऊँचे घने चीड़ के वृक्षों के बीचों-बीच साँप सदृश वल खाता यह सड़क मार्ग अति सुहावना एवं मनमोहक प्रतीत होता है ।

कल्लर से दो कि.मी. के बाद **आर्मी कार्पस बेसिक स्कूल** व कैम्प क्षेत्र को पार कर के **डूंगी-ब्लाक** प्रारम्भ हो जाता है । यहां पर एक **प्राईमरी स्वास्थ केन्द्र** है । **हायर सकेंडरी स्कूल** एवं **हाईस्कूल** तथा अन्य छोटे-मोटे कार्यालय जैसे **बैंक, डाकखाना** आदि निर्मित हैं (हाल ही में डूंगी क्षेत्र को ब्लाक का दर्जा देने की घोषणा की गयी है।) इस से आगे **केरी-क्षेत्र** प्रारम्भ होता है । यहां हरे-हरे खेतों तथा निम्न वर्ग के किसानों के घर यदा कदा दिखाई पड़ते हैं । इस के आगे केरी पुल को पार करके **शाहपुर, डूंगी** मनियालां जैसे छोटे-छोटे गांव आते हैं । इसके बाद **चिट्टी-बकरी** तथा **रटल-बसाली** नाम से दो महत्तवपूर्ण गांव हैं, यहाँ अधिकतर **गुज्जर** एवं **बकरवाल** लोग रहते हैं । दूघ, मक्खन, घी अदि यहाँ पर्याप्त मात्रा में उपलव्ध होता है ।

केरी से १० कि.मी. चिटटी बकरी से एक नव निर्मित सड़क पुंछ की ओर जाती है जो बी.जी. "**भिम्बर-गली**" में जाकर मिलती है । इस मार्ग के पूर्ण रूप से निर्मित होने पर जम्मू से पुंछ का फासला ४० कि.मी. कम हो जाएगा । केरी से २८ कि.मी. की दूरी पर **बारात-गला** नाम का एक गांव है । प्राचीन काल में जब ***पुंछ-कश्मीर*** अथवा ***पेशावर मुजफराबाद, मीरपुर कोटली*** से पैदल आने जाने वाली बारातें यहां रात भर के लिए रुका करती थी । इसी कारण इस स्थान का नाम **बारात-गला** पड़ा है ।

यह स्थान पत्नी-टाप से मिलता जुलता है । यहाँ से पी.ओ.के. मात्र ३०० गज की दूरी पर है । इस स्थान पर पानी के छोटे-बड़े चश्मे तथा खुबानी के बगीचे

काफी अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। यहाँ बी.आर.ओ. द्वारा निर्मित एक गैस्ट-हाउस भी है । यहाँ पर आर्मी का बेस कैम्प भी है। वीर-भद्रेश्वर से ५ कि.मी. पहले *ठण्डी-कस्सी* गांव आता है । यहाँ एक बहुत बड़ा मैदान है जो **पड़ां-कोटली** के नाम से सुप्रसिद्ध है। यहाँ पर लोग व्यापार के लिए अच्छी-२ नस्ल की गाये, बैल, भैंस आदि बेचने के लिए लाते थे और यहाँ से खरीद कर भी ले जाते थे। यह परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है।

ठण्ठी कस्सी से एक अन्य नव निर्मित मार्ग **लाम-लड़ौका** से होता हुआ पुंछ को नौशहरा से जोड़ता है । इस का निर्माण होने पर जम्मू से पुंछ व रास्ता **झंगड़ (बैरी-पत्तन)** मात्र १९० कि.मी. रह जाएगा। ठण्डी कस्सी से ही ५ कि.मी. वीर भद्रेश्वर का सीढ़ीनुमा क्षेत्र प्रारम्भ हो जाता है और दूर से ही ऊँची चोटी पर से घन्टियों की लम्बी-२ कतारों की फैन्सिग के मध्य एक अद्भुत प्राचीन **वीर-भद्रेश्वर मन्दिर** तथा इस के निकट अन्य छोटे-२ मन्दिरों का समूह दिखाई देता है । यह एक मात्र सर्वाधिक शान्त एवं सर्वमान्य प्राचीन अध यात्मिक स्थल है । यहाँ पर आए प्रत्येक श्रद्धालु की मन्नतें पूरी होती हैं और वह सब लोग अपनी मन्नत पूरी हो जाने पर पुणः यहां आ कर घण्टी बांधते हैं तथा हलवा प्रसाद आदि चढ़ाते हैं ।

प्रतिमाओं की जानकारी :- इस मन्दिर के अन्दर की प्रतिमाओं में निम्न अति उल्लेखनीय हैं । १- नंदी-गण, २- डेढ फुट ऊँचा शिवलिंग, ३- ५० कि. वजन की वीर-भद्रेश्वर की प्रतिमा जिसके साथ अद्कटे सीस में राजा दक्ष तथा रानी मेंनका की लघु प्रतिमाएं हैं । ४- साड़े तीन फुट ऊँची भगवान शिव की प्रतिमा, ५-काली माता की मूर्ती, ६-शेष नाग, ७-नटराज की प्रतिमा,८-पांडवों

की समाधियां, ९-भैरों नाथ की मूर्ती, १०-इस मठ के सर्व श्रेष्ठ महन्त बाबा गोदड़ नाथ की समाधि, ११- कुछ अन्य साधुओं की समाधियाँ, १२-अनेक शिला रूपी कलाकृतियों के अतिरिक्त इस मन्दिर परीसर में ५० से १०० कि. वज़न के पत्थर रूपी बुगदर जो प्राचीन क्रीड़ा के काम आते थे, इस मठ के प्रांगन में मौजूद हैं।

वीर-वद्रेश्वर शिवलिंग की स्थापना:- इस प्राचीन मन्दिर की मुख्य दीवार पर खुदे शिलालेख के अनुसार सन् १४१ई. में बौद्ध-भिक्षु कणिष्क द्वारा इस मन्दिर का निर्माण हुआ । तद्‌ोपरांत १९४७ की लड़ाई के दौरान इस मन्दिर को काफी क्षति पहुँचाई गई। बाद में भारतीय फौज द्वारा सन् १९५५ में इसे पुण: व्यवस्थित किया गया । इसमें एक भव्य शिवलिंग की स्थापना १० दिसम्बर १९८४ को **ले.कर्नल प्रेम प्रताप सिंह** क्षत्रीय तथा ८ गार्डस के तीन **महावीरचक्र विजेता** अफसरों द्वारा की गई ।

इस प्राचीन तीर्थ-स्थल पर *आषाढ़-पूर्णिमा* के दिन एक विशाल *'मेल'* का आयोजन किया जाता है, जिसमें आस-पास के अनेक गाँवों तथा राजौरी शहर के अनेक परिवारों के सदस्य श्रद्धापूर्वक वर्त रखते व विशाल भण्डारे का आयोजन करते हैं । अनेक परिवार अपने छोटे बच्चों का *मुण्डन संस्कार* इत्यादि इसी स्थल पर करते हैं।

८०० कनाल क्षेत्र की जगीर आस-पास के अनेक क्षेत्रों जैसे *भिम्बर, प्यालां, भंडालां व झंगड़* आदि के क्षेत्रों में फैली हुई है। २०० कनाल की एक अन्य गद्धी इसी से अलग होकर भण्डाला क्षेत्र में स्थापित की गई है। लगभग १३ कनाल का क्षेत्र *केरी आर्मी-ग्राऊँड* में शामिल है । इस गद्धी के कई गुरु समय-२ पर होते रहे। कुछ काल के लिए पं० बदरी नाथ तथा पं० वेद

शर्मा (राजौरी निवासी) इस मन्दिर परिसर की देख-रेख करते रहे हैं। कुछ समय के लिए फौज द्वारा पं० सुरेश कुमार को पुजारी नियुक्त किया गया। आजकल सिक्ख रेजिमेण्ट के जवान ही यहां की व्यवस्था करते हैं।

वीर-भद्रेश्वर से दिखने वाले अन्य महत्वपूर्ण स्थलः- राजौरी पुंछ क्षेत्र के इस अति विचित्र मन्दिर परिसर के प्रांगन में खड़े हो कर दूर-२ तक नजर दौड़ाने से अनेकों प्राकृतिक एवं स्वागींक दृश्यों के अतिरिक्त यहाँ से पूर्व दिशा में **माता वैष्णों** वाली **त्रिकुटा पर्वत श्रृंखला** के मध्य माता का भव्य मन्दिर परिसर व **भैंरो घाटी** दिखाई देते हैं । दक्षिण की ओर सीड़ी नुमा **किला-दरहाल, मंगला देवी** का किला **मंगला-माता** झंगड़ तथा पश्चिम की ओर पी.ओ.के. स्थित पीर पंचाल की करजाई घाटी में **माता रंजौती, बाण-गंगा** तथा **नंदा-देवी पर्वत श्रृंखला** के अतिरिक्त कई रमणीक स्थल देखने को मिलते हैं । इस मन्दिर के दाईं ओर स्वच्छ एवं मीठे जल के अनेक छोटे-२ स्रोत मौजूद हैं। इस के पश्चिम की ओर एक अति स्वच्छ जल-कुण्ड हैं जो आस पास के कई गावों की सिंचाई के लिए पानी उपलव्ध कराता है और अति स्वस्थ वर्धक स्थल माना जाता है। इस के अतिरिक्त अनेक क्षेत्र जैसे **खुई-रटटा वैली, लंगर, प्यालां, खमांह, माई-मंगलां, खड्डु-मौचियां, खड्डु-ब्रह्मणा, मीरपुर, कोटली, मंगला-डैम** तथा **भिम्बर शहर** साफ-२ दिखाई पड़ते हैं। पूर्णिमाँ की चाँदनी रातों में एक विशाल अजगर के सदृश बल खाती हुई जेहलम नदी का अति प्राकृतिक स्त्राव मन की गहराईओं तक छू लेने वाले अलौकिक दृश्यों का आभास करवाते हैं। यहां से मुज़फराबाद के निकट के दो विशिष्ट सिद्ध-पीठ, बाण-गंगा एवं माता-रंजोती यहां से साफ-२ दिखाई देते हैं।

वीर-भद्रेशवर मठ के रहस्यमयी चमत्कार :- वीर-भद्रेशवर क्षेत्र में सिद्ध बाबा **गोधड़-नाथ** के अत्यन्त चम्तकार सुनने में आते हैं । कहा जाता है कि अंग्रेज सरकार को जब इस चमत्कारी स्थल की विशेषता का आभास हुआ तो उन्होंने यहां पर एक फौजी छावनी बनाने के लिए इस मठ पर चढ़ाई कर इसे अपने कब्जे में लेना चाहा और घोंडों आदि सहित पूरी फौज की टुकडी को यहां चड़ाई करने के लिए भेज दिया। उधर बाबा गोधड़-नाथ जी को अपनी योग शक्ति एवं दिव्य-दृष्टी से यह ज्ञात हो गया कि यहां कुछ गोरे लोग आकर गोमांस आदि का सेवन कर इस स्थान की पवित्रता को भंग करने वाले हैं। इस से पूर्व कि वह इस दिव्य स्थान पर पहुंच पाए बाबा गोधड़-नाथ ने अपनी योग माया से सारी की सारी फौज को गिरा दिया और घोड़ों सहित अधिकाँश फौज ऊपर पहुंचने से पहले ही समाप्त हो गई। कुछ लोगों का कहना है कि यह अँग्रेजी फौज यहीं पर शिल-पत्थर बन गई जिस की प्रतिमाएं आज भी जल स्रोत के निकट देखने को मिलती हैं। यह भी कहा जाता है कि उस योगी ने जल देवता के आगे प्रार्थना की कि इस जल की पवित्रता एवं प्रशंसा के कारण ही यह लोग यहां पर आ रहे हैं। यह लोग इसे प्रदूषित करेंगे । अतः उन्होंने जल स्रोत के ऊपर चक्की का पुड़ रख दिया । जिससे केवल मठ को जितना जल प्रयाप्त था रह गया बाकी सारा जल स्रोत गुप्त हो कर किसी अन्य स्थान से प्रकट हो गया । कहा जाता है कि इसी जल ने यहां से करीव ५-६ कि.मि. पश्चिम की ओर से एक झरने का रूप धारण कर लिया । इस पूरी बर्तानिया फौज के दो अफसर बचे । तब उन्होंने कुछ राशन और चांदी के

रुपये आदि व प्रतिदिन का खर्च कई टीन तेल, रुई आदि यहां देना प्रारम्भ कर दिया।

बाण-गंगा का मंदिर परिसर :- जिस प्रकार इस मठ पर गोधड़-नाथ जी के चमत्कारों की चर्चा थी ठीक इसी प्रकार यहां से पश्चिम की ओर खुई-रटटा के निकट बाण-गंगा की चोटी पर एक अन्य सिद्ध-पुरुष **बाबा काशी दास** जी की चर्चा दूर-२ तक फैली हुई थी और आस पास के अनेक हिन्दू गावों के लोग इन्हें अपना कुल गुरु मानते थे तथा उनको १००८ साधुओं की संज्ञा दी जाती थी। कहा जाता है कि एक बार इसी क्षेत्र के कुछ यात्री कुम्भ पर्व पर गंगा-स्नान के लिए हरिद्वार जा रहे थे। महात्मा जी उन की यात्रा के उद्धेश्य को अपनी दिव्य-शक्ति द्वारा समझ गए और उन्हें यह ज्ञात हो गया कि यह बेचारे उस स्थान पर **कुम्भ स्नान** के मुहूरत के समाप्त होने तक पहुँचने में अस्मर्थ हैं। अतः महात्मा जी ने भगवती गंगा का आह्वान किया और उसी स्थान पर बाण मार कर गंगा मैया को प्रकट कर दिया। उसी स्थान पर अपने उन भक्तों को कुम्भ स्नान करवाने का चमत्कार करने के उपरान्त उस स्थान का नाम बाण-गंगा पड़ गया।

यहां पर प्राचीन काल से बैसाखी का भव्य मेला तथा दंगल आदि का आयोजन होता रहा है। कहा जाता है कि बाबा काशी दास जी जो बाद में काशी गिरी के नाम से जाने जाते रहे हैं, के साथ एक विराट **बाबा भैरों नाथ,** एक **सिंह** तथा एक **इच्छा-धारी नाग** (शेष-नाग) सदा ही उनकी ध्यान-समाधि के दौरान अंग रक्षक बन कर रहते थे। जिन्हें सवा लाख सेवकों के गुरु होने का वरदान प्राप्त था। एक मान्यता अनुसार यह पाँचों वरदान उन्हें जम्मू की पवित्र शिव-खोड़ी गुफा के बाद, कई वर्षों **श्री अमरनाथ जी** की गुफा में

तपस्या करने के उपरान्त साक्षात भगवान शिव जी ने दर्शन देकर स्वयं दिये थे ।

माता रंजोती का मन्दिर :- बाण-गंगा के उतर की ओर पर्वत श्रृंखला में रंजोती कुट पर माता रंजोती का भव्य मंदिर परिसर आज भी वहां मुस्लिम निवासियों के लिए एक रहस्यमयी पूजनीय स्थली है । यह एक **अदृश्य-मन्दिर** है। जिस का दृष्टांत माता-रंजोती ने प्राचीन काल में वहां के किसी निवासी को दिया - कि जिन के यहां संतान की उत्पत्ति न हो वह उस स्थान पर आ कर प्रतिज्ञा करें तो उन की मनोकामना पूर्ण होगी । अतः आज भी वहां के मुस्लिम लोग उस भव्य मंन्दिर परिसर में आकर अपने बच्चों के मुन्डन संस्कार आदि करवाते हैं। इसी कारण इस स्थान का नाम बिगाड़ कर माता रंजोटी कर दिया गया है।

इस के अतिरिक्त वीर-भद्रेश्वर मठ के मंदिर परिसर में किसी विशेष अवसर जैसे **शिव-रात्री** आदि पर ***बुड्डे अमरनाथ*** तथा ***बाबा अमरनाथ*** की तरह एक भव्य ***कबूतरों*** के जोड़े के दर्शन होते हैं। इस मंदिर में १० मिन्ट बैठ कर ध्यान लगाने से जितनी शान्ति एवं आनन्द का अनुभव होता है शायद ही किसी अन्य स्थान पर होता हो ।

किस प्रकार वीर-भद्रेश्वर नाम पीर-बडेसर पड़ा:- एक किंवदन्ति अनुसार वीर-भद्रेश्वर की चोटी पर समुद्र तल से ४५३२ फुट की ऊँचाई पर एक गांव **गरन** व्यवस्थित है । इस गांव का मुखिया बड़ा दयालु और नेक इन्सान था । उस का इकलौता बेटा बचपन से ही चलने फिरने में अस्मर्थ था और सदा चारपाई पर पड़ा रहता था । बच्चे की इस दशा के कारण मुखिया बड़ा दुःखी रहता था । उस की तन्दरुस्ती के लिए कई स्थानों पर मन्नतें मांगने के उपरान्त वह विधिवत

वीर-भद्रेश्वर के मठ पर जाने लगा और वहां नित्यप्रति ईबादत करने लगा ।

एक दिन अचानक मुखिया तथा उसके घर के सभी सदस्य दूर किसी काम के लिए गए हुए थे । बेटा अकेला बरामदे में एक चारपाई पर पड़ा था उस ने देखा कि एक अद्‌भुत भयानक जंगली जानवर उछल कूद करता हुआ उस की ओर आ रहा था । लड़का घबराहट में आकर उछल कर अंदर गया और दरवाजे के पीछे रखे एक तेज औज़ार से उस पशु पर वार किया और देखते ही देखते वह भयानक पशु अन्तर्धयान हो गया। इस घटना के बाद बालक बिल्कुल

ठीक होकर चलने फिरने लगा । जब मुखिया व उसके परिवार वाले वापिस घर लौटे तो यह चमत्कार देखकर अति प्रसन्न एवं आश्चर्य-चकित हो उठे। मुखिया ने यह घटना गांव वालों को सुनाई। वह अपने घर के सभी सदस्यों तथा गांव वालों को साथ लेकर वीर-भद्रेश्वर मठ पर गया और घी, गुड़, चावल, आटा, दालें आदि सभी समग्री ले जाकर एक भव्य भण्डारे का आयोजन किया और सभी के सामने इस मंदिर में विनती की कि *"हे बाबा आप कईयो के लिए देवता या गुरु तथा सिद्ध संत हो, परन्तु मेरे लिए आप एक महान पीर हैं"* आप धन्य हो । आप ने मेरे तथा मेरे समस्त परिवार के ऊपर बहुत बड़ी कृपा की है। हम आप के सदैव आभारी रहेंगे । इसके पश्चात इस स्थान के आस-पास रहने वाले सभी निवासी इसे **पीर-बडेसर** के नाम से ही पुकारने लगे ।

हम चाहे किसी भी नाम से पुकारें परन्तु इस दिव्य स्थान पर आए समस्त हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, बौद्ध तथा इसाई मत के श्रद्धालू यहाँ एक अद्‌भुत आनन्द एवं शान्ति का अनुभव करते हैं और इस

विचित्र अध्यात्मिक स्थली में अपनी इच्छानुसार पूजा अर्चना करते हैं एवं अपनी-२ प्रत्येक मन्नत पूरी हो जाने पर यहाँ पर एक बड़ी घण्टी बाँध कर जाते हैं। इस मन्दिर परिसर के अन्दर तथा बाहर अनेक घन्टियों की बड़ी-२ कतारें दिखाई देती हैं। जो अति सुहावनी लगती है तथा यहाँ का प्रकृतिक वातावरण स्वच्छ, एवं स्वर्ग का सा आभास कराता है।

मन्दिर के व्यवस्थक सिक्ख रेजिमैन्ट के पुजारी जी द्वारा यहाँ अति अधिक नई घन्टियां उपलब्ध करवाने की व्यवस्था की गई है। प्रत्येक घण्टी चढ़ाने वाला इस पर अपना नाम पता आदि भी लिखवा सकता है । इस मन्दिर परिसर के निकट इस से छोटे-२ कई अन्य मन्दिर भी हैं जो भिन्न-२ समय के सिद्ध पुरुषों तथा सन्तों की पूजा स्थली रहे हैं और इन सभी पर एक छोटा-२ शिला लेख खुदे हुए हैं जिन पर उन का नाम तथ समाधि की तिथि लिख रखी है।

वीर-भद्रेश्वर कैसे पहुंचे :- देवादिदेव भगवान शिव के अति विचित्र, अद्भुत, **शिव-गण रूपी संसार भर की एक मात्र** अति शान्त अध्यात्मिक स्थली जो की **जम्मू-कश्मीर के पश्चिमी किनारे** पर हिमालय की **शिवालिक-पर्वत श्रृंखला** की उत्तर-पश्चिमी चोटियों के समूह के मध्य स्थित इस महत्त्वपूर्ण तीर्थ-स्थल पर पहुंचने के लिए **राजौरी जनपद** के डिप्टी-कमीश्नर के कार्याल्य से वहां जाने के लिए लिखित अनुमति लेनी पड़ती है । यह अनुमति ग्रुप्स में भी मिल सकती है । चालक का नाम पता सहित गाड़ी का नम्बर आदि तथा यात्रा की तिथि के विषय में लिखित रूप में देना पड़ता है । अतः राजौरी से चल कर सायं काल तक वापिस राजौरी, कटड़ा या जम्मू तक सुगमता से पहुंचा जा सकता है ।

विश्वविख्यात **माता वैष्णों देवी** के दर्शनार्थ आने वाले यात्रियों को एक सुझाव है कि यदि उनके पास समय का आभाव न हो तो कटड़ा से उत्तर-पूर्व एवं उत्तर-पश्चिम में अनेक अति महत्त्वपूर्ण स्थल देखने लायक हैं । जिनमें उ.पू.की ओर **भद्रवाह** स्थित **कैलाश पर्वत** व **चनौत** में **माता-चण्डी** का मंदिर, **वासूकी-नाग** मंदिर के अतिरिक्त **पत्नीटाप, सन्नासर, सुद्ध-महादेव** व **राम-नगर** के ऐतिहासिक मंदिर हैं । इसी प्रकार कटड़ा से उत्तर-पश्चिम की ओर अद्‌भुत रोमांचकारी ***शिव-खोड़ी*** की गुफा, पुंछ स्थित ***बुड्डे अमरनाथ*** व नंगाली साहिब का गुरुद्वारा, तहसील मेंडर स्थित पौराणिक **राम-कुण्ड, सीता कुण्ड** तथा जिला राजौरी में ***शाहदरा शरीफ*** में **बाबा गुलाम शाह बडशाह** की दरगाह के अतिरिक्त रामगड़ का किला, **चिंगस** में मुगल सम्राट ***जहांगीर*** का किला एवं सराय तथा वीर-भद्रेश्वर मंदिर परिसर देखने लायक हैं। इसके अतिरिक्त तहसील नौशहरा में **पाँच गुफाओं वाला मंगला माता का मन्दिर** तथा **मंगल देवी का किला** अति महत्वपूर्ण स्थल है। बाकी सारे के सारे तीर्थ एवं पर्यटन स्थलों तक जाने के लिए किसी किसम की अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं हैं। केवल वीर-भद्रेश्वर मठ व मन्दिर परिसर में जाने के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है।

भगवान शिव के विशेष गण के इस भव्य मंदिर में जाकर पूजा अर्चना करने से मनुष्य की प्रत्येक मनोकामना की पूर्ती हो जाने के उपरान्त पुनः इस भव्य मन्दिर में पहुंच कर वीर-भद्रेश्वर के मन्दिर में घण्टी बाँधते हैं। इसी प्रकार मन्दिर के मेन गेट से लेकर चारों ओर की परिक्रमाओं तक घन्टियों की अनेक कतारें बंधी हुई हैं जो देखने में अति सुहावनी लगती हैं । इस मन्दिर परिसर का हवाई सर्वेक्षण करने से यह एक

चोटी पर निर्मित पूरे का पूरा मन्दिर ही एक शिवालय के सदृश दिखाई पड़ता है जो दूर-२ तक चारों ओर से एक जलहरी जैसा प्रतीत होता है ।

वीर-भद्रेश्वर शिव मन्दिर 'ससालकोट' डूंगी :- जिला रजौरी के सीमावर्ती क्षेत्र की एक ऊँची चोटी पर व्यस्थित वीर-भद्रेश्वर मन्दिर परिसर से मात्र ३० कि.मी. नीचे पहाड़ी क्षेत्र के प्रारम्भ से पहले डूंगी में यहाँ के प्रमुख गाँव वासियों तथा इस क्षेत्र में कार्यरत जागरुक एवं श्रद्धा-वान विभिन्न विभागों के सरकारी मुलाज़िमों के आर्थिक सहयोग के फल स्वरूप ससालकोट-बावली डूंगी में एक अति सुंदर वीर-भद्रेश्वर शिव-मन्दिर का निर्माण हुआ है । जो वीर-भद्रेश्वर का बेस-कैम्प माना जा सकता है । फरवरी २००६ में हुए शिवरात्री के अवसर पर इस भव्य मन्दिर में सफेद संगमरमर के डेड फुट ऊँचे शिवलिंग की स्थापना की गई है । इस अवसर पर आस-पास के सभी क्षेत्रों से आए हुए श्रद्धालुओं ने पूजा अर्चना की एवं हवन व भण्डारा का आयोजन किया। इस सारे कार्यक्रम को प० सुरेश कुमार जी ने बड़ी श्रद्धा एवं निष्ठा से समपन्न करवाया।

वीर-भद्रेश्वर विकास ट्रस्ट का संगठन :- वीर-भद्रेश्वर के समूचे क्षेत्र के साथ-२ वीर-भद्रेश्वर शिव गण के इस अति दुर्लभ मन्दिर परिसर के विकास हेतु इक्कीस सदस्सीय कमेटी का गठन किया गया। यह कमेटी संसार भर के इस एक मात्र अध्यात्मिक स्थल के विकास हेतु कुछ विचित्र एवं निर्णायक कदम उठाएगी जिन में पर्यटन एवं पुरात्तव विभागों की सहायता से इस के उत्थान तथा फौज के अधिकारियों से सम्बन्ध स्थापित कर यहां पर सार्वजनिक तौर पर आने-जाने के प्रतिबन्धों को हटवाने के प्रयासों के

अतिरिक्त माता वैष्णों देवी तथा शिव खोड़ी के स्तर पर वीर-भद्रेश्वर श्राईन बोर्ड का गठन करवाने हेतु कार्य करेगी ।

कुछ सुझाव :- १. वीर-भद्रेश्वर मठ के मन्दिर परिसर में कंई एक ऐसी वस्तुएं हैं जिनका संग्रह इस मठ के मुख्य मन्दिर के पुजारी द्वारा बड़ी दक्षता से किया गया है। जिन में प्राचीन शिलालेख जो फार्सी तथा संस्कृत आदि कई अज्ञात भाषाओं में लिखे पड़े हैं। इस के अतिरिक्त प्राचीन तांबे के बर्तन, पतीले, थाल, परातें, तथा योगियों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले कमण्डल एवं कानों में डाली जाने वाली मुद्रिकाएं, पत्थर की मूर्तियां, स्तम्भ, पत्थर के अनेक दरवाजे तथा अनगिनत प्राचीन मुद्राएं तथा प्राचीन मन्दिरों के गुम्बन्दों के टूटे हुए चिन्ह मौजूद हैं । मेरी इस लघु पुस्तक के माध्यम से **भारत सरकार के पुरातत्व विभाग से विनती है** कि वह **विशेषज्ञयों** की एक टीम को इस महत्वपूर्ण स्थल पर भेजें तथा उपरोक्त तथ्यों को प्रमाणित कर के इस मठ में एक **संग्रहालय** का निर्माण करवाने की योजना तैयार कर के इस मठ के निर्माण को प्रमाणिक बनाऐं। ऐसा करना इस लिए भी अनिवार्य हो जाता है क्यों कि वीर भद्रेश्वर भगवान का **विश्व भर में यह एक ही मन्दिर है,** इस के अतिरिक्त दक्षिण भारत में **मल्लिकार्जुन स्थित श्री सेलम ज्योर्तिलिंग** तथा **महाकालेश्वर मन्दिर उज्जैन** में वीरभद्र की एक-२ प्रतिमा स्थापित की गई है। तथा ऋषिकेश (हरिद्वार) से नीलकंठ को जाते हुए एक पहाड़ी पर भी वीर भद्र का छोटा सा मन्दिर निर्मित है। जो बहुत पुराना है।

२- इसके अतिरिक्त एक अन्य सुझाव है कि विश्व भर के इस एक मात्र अति विचित्र स्थल पर भारतीय फौज की तरफ से आने जाने वाले विभिन्न

प्रतिबन्धों को हटा दिया जाए ताकि अधिक से अधिक मात्रा में श्रद्धालु यहां दर्शनार्थ आ-जा सकें ।

३- इस मन्दिर के विकास के लिए वैष्णों देवी तथा शिव खोड़ी के स्तर पर एक श्राईन बोर्ड की स्थापना की जाए, जिस से इस लुप्त होती जा रही अति महत्वपूर्ण स्थली की जानकारी सभी देशवासियों तथा अन्य धार्मिक स्थलों पर आने वाले श्रद्धालुओं को मिल सके।

४- माननीय राज्यपाल, मुख्य मन्त्री, उपमुख्य मन्त्री, शिक्षा मंत्री तथा अन्य सभी विभागों के मंत्रियों-एवं अधिकारियों को इस स्थान पर दर्शनार्थ पधारने का अनुरोध है।

कहा जाता है कि **अमर ज्योती** नामी साधु सहित कई एक अति-विशिष्ट साधु-सन्तों, महात्माओं तथा सन्यासियों ने सन् १९४७ से लेकर १९७१ तक तथा उस से पहले बाल्यावस्था में तपस्या की थी। वह अब भी सन् १९९८ सें अपने अन्य साधुओं की मण्डली के साथ कई गाड़ियों के काफिले में प्रति वर्ष इस मंदिर के दर्शनार्थ पधारते हैं ।

इस स्थल पर देश के गण्मान्य व्यक्तियों में सर्व श्री एस०वी०चौहान, जार्ज फर्नाडिस व मुलायम सिंह यादव, बतौर रक्षा मंत्री एवं **डा. शंकर दयाल शर्मा** बतौर उप राष्ट्रपति सहित कई बड़े-२ नेता गण दर्शन कर चुके हैं। ऐसा यहाँ पर रखे एक रजिस्टर से ज्ञात होता है।

५- हाल ही में जम्मू-कश्मीर राज्य के मुख्य मंत्री तथा भारत के प्रधान मंत्री **श्री मनमोहन सिंह** जी द्वारा दोनों देशों के बीच सी.वी.एम. **कानफिडैन्स बिल्डिंग मेयर** की सद्भावना के अन्तर्गत **ऊड़ी-मुज्जफराबाद,** सड़क मार्ग खोलने के बाद अब **पुंछ-रावलाकोट** को

खोल दिया गया है। इसी के साथ यदि **राजौरी** अथवा **नौशहरा-झंगड़** से **मीरपुर-कोटली** आदि का मार्ग भी खोल दिया जाए तो इस क्षेत्र में सन् १९४७ की लड़ाई के बाद उन्हीं (पी०ओ०के०) के विभिन्न क्षेत्रों से आकर बसे लाखों श्रद्धालुओं को अपने-२ देव-स्थलों के दर्शनार्थ वहां जाने का अवसर प्रदान करवाया जाये तो इस दिशा में एक उचित कदम होगा । साथ ही दोनों देशों के बीच **पर्सन-टू-पर्सन कानटेक्ट** (तालमेल) का एक अच्छा अवसर मिल सकेगा ।

अन्त में लेखक द्वारा अपने वीर-भद्रेश्वर की इस पवित्र घाटी के प्रति श्रद्धा भरे उदगार निम्न कविता में इस प्रकार व्यक्त किए गये हैं :-

वीर-भद्रेश्वर - स्तवन

जिस धरती को कनिष्क जी ने,
यायावरी, बनाया,
जिसने बौद्ध भिक्षों को सारे
जग में फैलाया,
पिटक दम्प-पद मिलिन्द, पुञ्ज में,
कूंजित है जो माटी,
वीर-भद्रेश्वर शिव-गण से
शिवमय हुई जो,
शिव-लिंग रूपी घाटी,
मैं अदना इस पावन धरती के,
बन्दन हेतु आया,
ईश्वर का कृतज्ञ सदा यह
अहो भाग्य जो पाया,

नित्य रामायण के पाठों से
गूंजित है जो माटी,
और गीता के उपदेशों से
नियमित है परिपाटी,
इस शिवमय पावन धाती को
इस अति पवित्र माटी को,
'सागर' का छतः छतः नमन,
इस शिव-लिंग रूपी घाटी को ॥

श्री वीर-भद्रेश्वर चालीसा

गुरुचरणों में शीश नवाऊँ,
वीर-भद्रेश्वर चालीसा गाऊँ,
ज्ञान भक्ति की होवे वर्षा,
पड़े सुने जो रहे न संशय,
जय वीर-भद्रेश्वर शिव दूता,
दीन-दुःखी के भाग्य विधाता,
कृपा तुम्हारी सब पर रहती,
ज्ञान गंगा की धारा बहती,
सफल होहीं सब कार्य हमारा,
नाम जपे जो भक्त तुम्हारा ।
राजा दक्ष ने यज्ञ रचाया,
समस्त देवी-देवों को बुलाया,
भुलाया क्यों महाँदेव शिव भोला,
क्यों नहीं दक्ष का आसन डोला,
मात सति का मन घबराया,
अनिष्ट कोई होने को आया,
सति ने शिव से आज्ञा माँगी,
पिता घर जाने की जिद्ध ठानी,
शिव-भोले हैं अन्तरयामी,

की शिव ने कुछ आना-कान्ही,
त्रिया-हठ सति ने दिखलाया,
दक्ष के घर जा उधम मचाया,
मात मेनका ने बहुत समझाया,
सति का मन यह मान न पाया,
दक्ष ने शिव को क्यों न बुलाया,
शिव रहित यज्ञ क्यों कर रचाया,
दक्ष ने सति की एक न मानी,
यज्ञ शुरु किया द्वेश में आनी,
शिव अनादर सति सह न पाई,
हवन कुण्ड में जान गवाई,
शिव ने क्रोध में जटा उखाड़ी,
धरती ऊपर आन पछाड़ी,
वीर-भद्रेश्वर उपजे उत्तर से,
प्रकटी **भद्रकाली** दक्षिण से,
हाथ जोड़ कर शिव के सन्मुख,
वीर-भद्र हुए नत्मस्तक,
शिव ने कहा दक्ष घर जाओ,
दक्ष-यज्ञ विध्वन्स कर आओ,
मेनका दक्ष को जीवित लाओ,
जो रोके उसे मार गिराओ,
वीर-भद्र भू लोक पधारे,
दक्ष-दूत चहूं ओर निहारें,
योद्धा विचित्र भूमि पे उतारे,
दक्ष के दूत समस्त पछाड़े,
स्वयं दक्ष ने युद्ध जब कीन्हां,
भद्रेश्वर ने बध करी दीन्हा,
सब देवों ने बिनती कीन्हीं,
दक्ष प्राणों की भिक्षा दीन्हीं,
शिव भोले ने युक्ति जुटाई,

मेष मुण्डिका दक्ष को लगाई,
बम-२ करी जब दीन्हीं दुहाई,
ब्रह्मा जी ने वाणी लौटाई,
शिव भोले क्रुध्द हुए भारी,
रुद्र रूप बना प्रलय कारी,
सति-शव लिए उड़े शिव भोले,
भयभीत त्रिलोकी तब डोले,
समस्त देवों ने युक्ति कीन्हीं,
विष्णु जी की स्तुती कीन्हीं,
विष्णु जी सुदर्शन चक्र चलाएं,
सति के अंग भंग करि धाएं,
जहाँ-२ अंग गिरे माता के,
शक्ति पीठ बन भू पर उबरे,
रुद्र-रूप शिव शान्त हुए जब,
समस्त देव नत्मस्तक हुए तब,
रुद्र रूप त्रिलोक विशिष्टा,
पूजे संसार तुम्हें कर निष्टा,
तुम्हारी कृपा से कष्ट कलेशा,
दूर करें सब राग-द्वेषा,
भद्रेश्वर आज्ञा पूर्ण कर,
उड़ि चले कैलाश पर्वत पर,
उड़ी-२ चलें शिव-रुप वीर वर,
उतरे आई भद्रेश्वर चोटी पर,
क्षण में मन्दिर निर्मित कीन्हा,
रात्री भर विश्राम यहाँ कीन्हा,
''वीर-भद्रेश्वर'' मठ पर जाई,
हवन करे एकाग्र चित होई,
शिव-रात्री पर जो नर जाई,
चार पहर की महिमा गाई,
दुःख-दरिद्र वा के मिटि जाई,

शिव भोला रहे सदा सहाई,
तुझ सम रुद्र रूप नहीं दूजा,
तुम्हारी महिमा जप, तप, पूजा,
कलयुग में जो तुम्हें ध्याता,
भद्रेश्वर सब दुःख दूर भगाता,
जो नर भक्ति तुझ पर वारे,
शिव-भोला उसके कष्ट निवारे,

दोहाः- भद्र-वीर रक्षा करें, कहे 'सागर' निंशंक ।
जो आया शरण तिहारी प्रभु, पार करो भरी अंक ॥

ॐ शिव स्वरुपाये नमः, ॐ वीर-भद्रेश्वराय नमः ॐ
ॐ शिव दूताए नमः, ॐ वीर-भद्रेश्वराय नमः ॐ

ॐ भद्रकालिके नमः, वीर-भद्रेश्वराय, सहस्रानि नमः
महादेवाय नमस्तुभयम, नमस्तुभयम सति-मातेश्वरी

आरती वीर-भद्रेश्वर जी की

आरती वीर भद्रेश्वर जी की ।
दुर्लभ शिव गण रुद्र मनी की ॥
दुष्ट दलन शिव भक्त प्रिये की ।
आरती वीर भद्रेश्वर जी की ।
राजा दक्ष ने दृष्टता कीन्हीं ॥
शिव-विमुख होई अनिष्टता कीन्हीं ।
शिव अर्धांगिनि, सति के हिये में ॥
हीन भावना बल कर दीन्हीं ।
पिता - गृह जाई अनिष्टता कीन्हीं ॥
यज्ञ में कूदी प्राण तजि दीन्हीं ।
मात मेनका रुदन अति कीन्हीं ॥
शिव भोंले के क्रुद्ध स्वरुपा ।
है तुम्हरा स्वरूप अति भूपा ॥
कल-युग में जिस भद्र-स्तुति गाई ।

वीर - भद्रेश्वर हुए सदा सहाई ॥
आरती वीर भद्रेश्वर जी की ।
दुर्लभ शिव - गण रुद्र मनी की ॥
वीर-भद्रेश्वर की स्तुति करे जो बारम्बार ।
श्रद्धा भक्ति से तभी "सागर" हो भव पार ॥
वीर भद्रेश्वर की जय, **उमा पति महादेव** की जय
भद्रकाली जी की जय, माता **सति** की जय
सिया वर **राम चन्द्र** की जय, **वीर हनुमान** की जय,
अपने-२ गुरु गोबिन्द की जय, **भोले शंकर** की
जय।

भाग-दो

वरिष्ट पूजा-संग्रह

प्रारम्भिक सन्ध्या पूजाः- बायें हाथ में जल लेकर नीचे लिखे मंत्र पढ़ते हुए कुशा से शरीर पर छिड़कें ।

१. आसन व शरीर शुद्धि-मंत्रः-

ॐ अपवित्रः-पवित्रो वा सर्वावस्थाँ गतोऽपि वा । यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बह्याभ्यन्तरः शुचिः ।
(इस मंत्र का उच्चारन करते हुए तीन बार अपने ऊपर जल छिड़कें।)

२. वैष्वणवाचमनम् :- ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः । ॐ माधवाय नमः ।

हस्त प्रक्षालनम :- ॐ गोविन्दाय नमः । ॐ श्री प्रमात्मणे नमः ।

३. अंग न्यासः- नीचे लिखे मंत्र से अंग स्पर्श :- ॐ अस्त्राय फट्। ॐ वाक् वाक् । ॐ प्राणः प्राणः । ॐ चक्षु चक्षु । ॐ स्रोत्रं स्रोत्रं । ॐ नाभि । ॐ हृदयम् । ॐ कण्ठा। ॐ शिरा । ॐ बाहूभ्याम् यशोवतः । ॐ करतल कर पृष्ठे।

४. विनीयोग :- ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषि सुतलंछन्दः कूर्मो देवता आसन शोधने विनीयोगः ।

५. पृथ्वी प्रार्थना :- *इस मंत्र सें आसन पर जल छिड़कें* "ॐ पृथ्वी त्वयां घृता लोका देवि त्वं विष्णुनां घृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम् ।

६. प्रतिज्ञा संकल्प :- ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्री मदभ्गवते महा पुरुषस्यविष्णों राक्षया-प्रवर्तमानसः अद्य श्री ब्रह्मनोद्धितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराह-कल्पे वैवस्वत मनवन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भरतवर्षे जम्बू द्वीपे आर्या वर्तैक (जम्मु-कश्मीर) देशान्तरगते अमुक क्षेत्रे...वौद्धावतारे अस्मिन वर्तमान अमुक... नामसंवत्सरे अमुकायने... अमुक ऋतौ... अमुक मासे.. अमुक पक्षे..., अमुक तिथौ..., अमुक वासरे..., अमुक गोत्रः..., अमुकशर्मा... मम आत्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक चतुर्विद्यपातक-दरितक्षय द्वारा धर्माथकाम मोक्षचतर्विद्य पुरुषाजं प्राप्त्र्यथम् श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थ क्रियमानों.. (५१ सहस्र) जप कर्म करिष्ये ।

७. दीप-ज्योति प्रज्वलन मंत्रः-

ॐ दीपो-ज्योतिः परम-ब्रह्मः दीपो-ज्योति जनार्दनः,
दीपो हरतु मे पापं सन्ध्यादीप नमोऽस्तुते ।
शुभं करोतु कल्याणं आरोग्य सुखःसंम्पदाम,

मम बुद्धि प्रकाशं च, दीप-ज्योतिर्न नमोऽस्तुते ।

८. नव-गृह पूजा मंत्र :-

ब्रह्म-मुरारी स्त्रिपुरांतकारी, भानुः,
शशि, भूमिसुतो, बुद्धश्च ।
गुरूश्चशुक्रः, शनि-राहु-केतवा,
सर्वे-ग्रहः शान्तिकरा भवन्तु ॥

९.सभी ग्रहों के बीज मंत्र :-

सूर्य : ऊँ ह्राँ ह्रीं ह्रों सः सूर्याय नमः
चन्द्र : ऊँ श्राँ श्रीं श्रों, सः चन्द्रमसे नमः
मंगल : ऊँ क्राँ क्रीं क्रों सः भौमाय नमः
बुद्ध : ऊँ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः
गुरु : ऊँ ग्राँ ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः
शुक्र : ऊँ द्राँ द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः
शनि : ऊँ प्राँ प्रीं प्रों सः शनेश्चराय नमः
श्राहु : ऊँ भ्राँ भ्रीं भ्रों सः राहुवे नमः
केतु : ऊँ स्त्राँ स्त्रीं स्त्रों सः केतुवे नमः

१०.बुद्धि मंत्र :- *ऊँ ह्राँ ह्रूं श्रीं ह्रीं भगवते महा मत्स्याय नमः बुद्धि मे देहि-देहि स्वाहः*

इस मंत्र की एक माला प्रतिदिन स्फटिक माला से करनी चाहिए । अज्ञानता से मुक्ति प्राप्त होगी । परीक्षा से पूर्व ११ बार इस मंत्र का जप करके जाने से परीक्षा फल अच्छा होगा ।

११. **गुरु बन्दना :-**

गुरुं ब्रह्मा गुरुं विष्णु गुरुं देवो महेशवरां ।
गुरुं साक्षात परंमब्रह्म तस्मे श्री गुरुवे नमः ॥
गुरु मूर्ति मुख चन्द्रमा सेबक नैन चकोर ।
अष्ट पहर निरखत रहुँ गुरु मूर्ति की ओर ॥
एक घड़ी आधी घड़ी, आधी से पुणिः आध ।

तुलसी संगत साधु की हरे कोटि अपराध ॥
सियावर राम चन्द्र की जय, गुरू गोविन्द की जय॥

परम् पूज्य गुरुदेव १००८ ब्रह्म ऋषि बाबा दूधाधारी बर्फानी जी महाराज की आरती

हे मेरे गुरुदेव करुणा सिन्धु करुणा कीजिए ।
हूँ अदम आधीन अशरण अब शरण में लीजिए ।
खा रहा गोते हूँ मैं भव सिन्धु के मझदार में ।
आसरा है दूसरा न अब कोई संसार में ।
मुझ में है जपतप न साधन ओर नहीं कछु ज्ञान है।
निर्लजता है एक बाकी और बस अभिमान है ।
पाप बोझे से लदी नेईया भंवर में जा रही ।
नाथ दोड़ो आ बचावो जल्दी डूबी जा रही ।
गुरुजी आप दोड़ो आ बचावो जल्दी डूबी जा रही ।
आप भी यदि छोड़ दोगे फिर कहाँ जाऊँगा मैं ।
जन्म दुःख की नाव कैसें पार कर पाऊँगा मैं ।
सब जगह मंजिल भटककर अब शरणली आपकी ।
पार करना या न करना दोनों मरजी आपकी ।
हे मेरे गुरु देव करुणा सिन्धु करुणा कीजिए ।
हूँ अदम आधीन अशरण अब शरण में लीजिए ।
सिया वर राम चन्द्र की जय । अवध पति राम लला की जय । पवनसुत हनुमान जी की जय । उमापति महादेव जी की जय । रमा पति राम चन्द्र जी की जय। अपने-२ गुरु गोबिन्द की जय ॥ बोलिए **श्री दूधाधरी बर्फानी** जी महाराज की जय । **सन्त शिरोमणि सन्त प्रभुदास जी** महाराज की जय बालो भाई सब सन्तों की जय । भूपत वाला की जय । गंगा मैया की जय । गऊ माता की जय। हर हर महादेव । जय जय सीता राम । पाही नाथ कहि पाही गसाई, भूतल परे लकुटकी नाई ।

(श्रीरामजी की प्रातःकालीन स्तुति)

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रुप बिचारी ॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिधुं खरारी ॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता ।
मया गुन ग्यानातीत अमाना वेद पुरान भनंता ॥
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
से मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ॥
बम्ह्मंड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै ।
मन उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥
दोहाः- बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥

भगवान को सिर झुकाते हुए -

सियावर राम चन्द्र की जय, अयोध्यापति राम लला की जय, पवनसुत हनुमान् की जय, उमापति महादेव की जय, रमापति रामचन्द्रजी की जय, बृन्दावन कृष्ण बलदाऊ की जय, बोलो भाई सब सन्तन की जय, अपने-अपने गुरुदेव महाराज की जय, साँझा आरती की जय, जय जय सीताराम ।

(श्रीरामजी की सायंकालीन स्तुति)

श्री राम स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभयदारुणम् ।
नव कंजलोचन कंजमुख करकंज पदकंजारुणम् ।

कन्दर्प अगणित अमितछवि नवनीलनीरदसुन्दरम् ।
पट पीत मानहुं तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्।
सिर मुकुटकुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम्।
आजानु भुज, सर चाप धरि संग्रामजित खरदूषणम् ।
भज दीनबंधु दिनेश! दानवदलन, दुष्टनिकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कोशलचन्द्र दशरथनन्दनम् ।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनिमनरंजनम् ।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खलदल गंजनम् ।

(श्री सीता माता जी की स्तुति)

जय जनक नन्दिनी जगत नन्दिनी जन आनन्दनी श्री जानकी।
श्रघुवीर नयनचकोरचन्दिनी बल्लभा निज प्राण की ।
तव कंजपद मकरन्द स्वादित योगिजन मन अलि किये।
करि पान गिनत न आनहि निरवाण सुख आनन्द हिये ।
सुख खानि मंगल दानि जन जानि शरण जो जात है ।
तव नाथ सब सुख साथ करि तेहि हाथ रीझि बिकातहै।
ब्रह्मादि शिव सनकादि सुरपति आदि निज मुख भाषहीं ।
तव कृपा नयन कटाक्ष चितवनि दिवस निसि अभिलाषहीं
तनु पाइ तुमहि विहाई जड़मति आन मानस देवहीं ।
हत भाग सुरतरु त्याग करि अनुराग रेड़हीं सेवहीं ।
यह आस रघुवर दास के सुख राशि पूरण कीजिए।
निज चरण कमल सनेह जनक विदेहजा वर दीजिए।
मन जाहि राचेउ मिलहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो
करुनानिधन सुजानसीलु स्नेहु जानत रावरो ।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषित अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥
सोरठाः- जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाई कहि ।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे ॥
सियावर राम चन्द्र की जय ॥ पवन सुत हनुमान की जय॥

श्लोक

नीलाम्बुजश्यामलकोमलागं,सीता समारोहपित वामभागम् ।
पाणौ महासायकचारुचापं, नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥
भवाब्धिपोतं भरताग्रजं तं, भक्तिप्रियं भानुकुलप्रदीपंम् ।
भूताधिनाथं भुवनाधिपत्यं, भजामि रामं भवरोगवैधम् ॥
सर्वाधिपत्यं समरांगधीरं, सत्यं चिदान्नदमय स्वरुपम् ।
सत्यं शिवं शान्तमयं शरण्यं, सनातनं राममहं भजामि ॥
लाकाभिरामं रणरंगधीरं, राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरुपं करुणाकरं तं, श्री रामचन्द्र शरणं प्रपद्यं ॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं बानरयूथमुख्यं श्रीराम दूतंशरणं प्रपद्ये ॥
सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं, हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं, मया प्रमादात्प्रणयेन वापि ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देव देव ॥
शान्ताकारं भुजगशयनं पद्यनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसादृशं मेघवर्ण शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
बन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

सशंखचक्रं सकिरीटकुण्डलं, सपीत वस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं, नमामि विष्णुं सिरसा चतुर्भुजन्॥
वंशीविभूपितकरान्नंवनीरदाभात्पीताम्बरादरुण बिम्बफलाधरोष्ठात।
पुर्णेन्दुसुन्दरमुखारविन्दनेत्रात्कृष्णात्परं किमपि तत्वमहं न जाने॥
अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं, जानकीनायकं श्री रामचन्द्रंभजे॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये ।

(श्लोक को कहते हुए हाथ जोड़कर भगवान् को शीश झुकायें)

गुरु स्तुति

नित्यानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति ।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्षम्यम् ॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं ।

भावातीतं त्रिगुणरहितं सदगुरुः तं नमामि ॥

स्नान मन्त्र :-

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥

सूर्य दर्शन मन्त्र :-

कनकवर्णमहातेजं रत्नमालाविभूषितम् ।
प्रातः काले रवि दर्शनं सर्व पाप विमोचनम् ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय सहस्रानि नमः ।
ॐ हाँ हीं हौं सः सुर्याय नमः।
ॐ अदित्याय नमः । ॐ भस्कराय नमः ।
ॐ नारायणाय नमः । ॐ सं सूर्याय नमः ।
ॐ रव्यिे कारयभानवे नमः । ॐ मतन्गाय नमः ।
ॐ मारतण्डाय नमः । ॐ सूर्याये नमः ।
ॐ जपाकुसुमा संकेतं कासंकेय-तमो सहस्राणि
नमामि-विवस्वते ॐ नमोऽस्तुते।

१२. अथ शनिदेव स्तुति (१):-

❖ ॐ नीलाँज्ना समाभास्म रविपुत्राय यमऽग्रजम
छाया मारतण्डः सम्भूतम् तमः सहस्रानि नमामि शनेश्चरम्।
❖ ॐ शं शनेश्चराय नमः
❖ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनेश्चराय नमः
❖ ॐ शन्नों देवी रविष्टया, आपोभवन्तु पीत्ये शन्नो रवि सर्वन्तृणा,
❖ ॐ सः प्रां, प्रीं, प्रों, ॐ शं शनेश्चराय सहस्रानि नमः

।।श्री सूर्य स्तुति।।

प्रातर्भजामि सवितारमनन्शक्तिं
पापौघशत्रुभयरोगहरं परं च।
तं सर्वलोककलनात्मककालमूर्ति
गोकण्ठबन्धनविमोचनमादिदेवम्।।

भविष्य में आने वाले सूरज ग्रहण

१.८.२००८ सायं ४ बजे से ६ बजे तक।
२६.१.२००९, २२.०७.२००९ १५.१.२०१०,
२६.१२.२०१९, २१.६.२०२०, २५.१०.२०२२,
२.८.२०२७, १.६.२०३०, २१.५.२०३१,
३.११.२०३२, २०.३.२०३४, २१.१०.२०३५, तथा
२०.४.२०४२

ग्रायत्री मन्त्र का प्रभावः- सूर्य ग्रहण के समय जितना हो सके ईश्वर चिन्तन, 'आदित्य हृदय-स्रोत' अथवा गायत्री मंत्र पाठ करना चाहिए।।

शनिदेव स्तुति (२):-

नमो मार्तण्ड सुपुत्र बलिष्टं ।
नमो छाया, तापं, हरतं अनिष्टं ।।
नमो रौद्र रूपं अनूपं अखंडम् ।
नमो मोघ, वभ्रु नमो सौरि चंडम् ।।
नमो मंद कृष्ण कृष्णों नमो नित्य लाभं ।
नमो सूर्यकान्तं प्रभावं सुआभं ।।
नमो भद्र भेषं नमो पिंगलाक्षं ।
नमो नील पद्मा नमो साख्य साख्यं ।।
नमो भीम रूपं नमो वक्रदृष्टं ।
नमो मेघ आभं, नमो सर्वसृष्टं ।।
नमो नील वस्त्रं ब्रुहस्तं सूचक्रं ।
नमो कोऽ क्रीडत भ्रूहं सुवक्रं ।।
नमोऽहं शनैश्चर आनन्द दाता ।
शरणदास 'सागर' धरंपाद माथं ।।

१३.शनि अष्टक

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीशनैश्चर सतोत्र मंत्रस्य दशरथऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः श्री शनैश्चरो देवता श्री शनैश्चर प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

कोणऽन्नतको रौद्रयमोऽथ बभ्रुः कृष्णः शनिः पिंगलमन्दसौरिः ।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्रीरविनंदनाय॥
नरा नरेन्द्र प्शवो मृगंन्द्र बन्याश्च ये कीटपतंगभृगाः।
पीड्यन्ति सर्वै विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥
दंशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेनानिवेशाः पुष्पत्तनानि।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनंदनाय
तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैः लौर्हेश्च नीलाम्बरदानतो वा ।
प्रीणाति मत्रैर्निजवासरे च तस्मै नमः श्रीरविनंदनाय ॥
प्रयागकूले यमुनातटे वा सरस्वती पंयम्जले गुहायाम्।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपिसूक्ष्म तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥
अन्यप्रदेशात् स्वगृहं प्रविष्ट स्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात् ।

गृहाद् गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥
स्त्रष्टा स्वयम्भुर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी।
एक स्त्रिधा ऋग्यजुसाममूर्ति स्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय॥
शन्यअष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सपुत्रैः पशुवान्धवैश्य ।
पठेतु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ने॥

१४. शनि स्त्रोत्रः-

ॐ नमस्ते कोण-संस्थाय, पिंगलाय, नमोऽस्तुते ।
नमस्ते बभ्रु रूपाय, कृष्णाय च नमोऽस्तुते ॥
नमस्ते रोद्रे-देहाय, नमस्ते चान्तकाय च ।
नमस्ते यम संज्ञाय, नमस्ते शोरये विभो ॥
नमस्तुते मन्द संज्ञाय, शनेश्चरे नमोऽस्तुते ।
प्रसादं कुरु देवेश, दीनस्यं प्रणतस्य च ॥
कोणस्य, पिंगलो, बभ्रु, कृष्णो, रोद्रान्तको यमः ।
सौरिः शनिश्चरो मन्द पिपलादेन संस्तुतः ॥
एतानि दशनामानि प्रातः रुत्याय यः पठेत ।
शनिश्चर कृता पीड़ा न कदाचित भविष्यति ॥

नोटः- प्रातः भगवान शिव की पूजा अर्चना के बाद इस सत्रोत्र का ११ बार पाठ कर कच्ची लस्सी में काले तिल डाल कर पीपल को चढ़ावें ।
सायं काल को पीपल के नीचे तेल का दीपक जलाकर पुणः ११ बारपाठ करें । शनि अनिष्ठ अवश्य शान्त होगा।

१५.राहु के मंत्रः-

ॐ ऐं ह्रीं राहुवे सहस्रानि नमः ।
ॐ भ्रां भ्रीं भ्रों सः राहुवे सहस्रानि नमः ।
ॐ अर्धकाय महावीरये चन्द्रमित्र विर्मदकम ।
सिमिका गर्भ सम्भूतम् तम राहु सहस्रानि प्रणामहम ।
ॐ राहुवे नमोऽस्तुते ।

१६.केतु के मंत्रः-

ॐ ह्रीं केतवे सहस्रानि नमः ।
ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं स केतवे सहस्रानि नमः ।
ॐ पालशा पुश्य संकेतं तारका गृह मस्त्कम ।
रोद्रः रोद्रः तम केतुम सहस्रानि प्रणामहम ।
मेष राषि का मंत्रः-ॐ ह्री श्रीं लक्ष्मी नारायणाय नमः ।
बश्ष राषि का मंत्रः-ॐ गोपालाय उत्तर ध्वजाय नमः ।
बश्श्चिक राषि का मंत्रः- ॐ नारायणाय सुर सिहाय नमः ।
मक़र राषि का मंत्रः- ॐ श्रीं वत्सलाय नमः ।
मीन राषि का मंत्रः- ॐ कलीं उद्धश्ताय उद्धारिन्ने सहस्रानि नमः ।

१७. श्री गणपति पूजा :-

ॐ गं गणपतिये नमः ।। ॐ गणेशाय नमः।।
ॐ विधनेश्वराय नमः।। ॐ मूश्क वाहनाय नमः।।
ॐ गजाननाय नमः।। ॐ लम्बोदराय नमः।।
ॐ सुरपूजिताय नमः।। ॐ सुर प्रियाय नमः।।

ॐ शिव प्रियाय नमः॥ ॐ माता गौरी प्रियाय नमः॥

ॐ वरदाय नमः॥ ॐ सकलाय नमः॥

ॐ जगत्तिताय नमः॥ ॐ नागानिनाय नमः॥

ॐ श्रुतियज्ञ विभूषिताय नमः॥ ॐ गौरी सुताय नमः॥

ॐ गणनाथाय नमः॥ ॐ गणादिपतियाय नमः॥

ॐ एक दन्ताय नमः॥ ॐ वक्रतुण्डाये नमः॥

ॐ ऋद्धि-सिद्धि सहितताय नमः॥

ॐ शिव गौरी गणपतियाये नमः॥

ॐ सर्वसिद्धि प्रदाय नमः॥ ॐ कुमार गोरवे नमः॥

ॐ उमापुत्राय नमः॥ ॐ सिद्धिविनायकाय नमः॥

❖ ॐ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभा ।

निर्विघन कुरुमेदेव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

❖ ॐ एक दन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाये धीमहि ।
तन्नो दन्ति (तन्नो बुद्धि) प्रचोद्यात् ॥

अर्थात्ःश्री गणेश ऋद्धि-सिद्धि के देवता हैं । विघ्न-विनाशक हैं। सफलता के अधिष्ठाता हैं और शीघ प्रसन्न होने वाले हैं । हर शुभ कार्य में सर्वप्रथम श्री गणेश जी की पूजा करनी होती है। इससे वह कार्य निर्विघन पूरा होता है । वह बुद्धिमानों में श्रेष्ठ हैं और ज्ञान के भण्डार हैं ।

❖ ॐ गजाननं भूतगणाधि सेवितं, कपिथ जम्बू-फल चारु भक्षणम् ।
उमा सुतं शोक विनाश कारकं नमामि सहस्राणि विघनेश्वर पाद पंकजं ॥

❖ ॐ विघनेश्वराय, वरदाय, सुरप्रियाय, लम्बोदराय, सकलाय, जगत्तिताय, नागानिणाय, श्रुति यज्ञ विभूषिताय, गौरी सुताय, गण नाथाय, रिद्धि सिद्धि सहित्ताय, सिद्धि विनाकाय सहस्राणि नमोऽस्तुते ॥

❖ ॐ गं गणादिपत्तियाय गणेशाय नमः॥

१८.गणेश जी की आरती :-

शिव गौरी नंद गणेश प्रथम प्रणाम करुं -२ ।
माता जिनकी पार्वती हैं, पिता हैं जिनके महेश प्रथम प्रणाम करुं ।
शीश गजानन मुकुट विराजे, सुन्दर बदन सुरेश ।प्र०
विघ्न हरण मंगल के दाता, काटो नाथ कलेश ।प्र०
कृपा जिनकी सकल जगत पे, तीन लोक के ईश । प्र०
दो कर जोड़ शरण प्रभु तेरी -२, काटो नाथ कलेश। प्र०
माता जिनकी पार्वती हैं, पिता हैं जिनके महेश ।प्रथम०
जय गौरी नन्द गणेश ।प्रथम००
शिव गौरी नन्द गणेश। प्रथम०

❖ **सिद्ध मंत्र**:- ॐ विनायकं गुरु, भानु, ब्रह्म, विष्णु महेश्वरां।
सरस्वती् प्रणम्यादौ, सर्वदा कार्य सिद्धये ॥

१९.शिव-वन्दना :-

ॐ नमः शिवाय ।
ॐ रुद्रो नर उमा नारिः, तस्मय तस्ये नमोः नमः
ॐ रुद्रो ब्रह्मा उमा बाणि, तस्मय तस्ये नमोः नमः
ॐ रुद्रो विष्णु उमा लक्ष्मी, तस्मय तस्ये नमोः नमः
ॐ रुद्रो सूर्य उमा छाया, तस्मय तस्ये नमोः नमः
ॐ रुद्रो दिवा उमा रात्री, तस्मय तस्ये नमोः नमः
ॐ रुद्रो अर्थ अक्षरः सोम, तस्मय तस्ये नमोः नमः
ॐ रुद्रो यज्ञ उमा बेदि, तस्मय तस्ये नमोः नमः
ॐ रुद्रो लिगं उमा पीठं, तस्मय तस्ये नमोः नमः।ॐ।

२०.अथ शिवनामावलिः

ॐ, महादेव! शिव! शंकर! शम्भो!
उमाकान्त! हर! त्रिपुरारे! ।
मृत्युंजय!-२ वृषभध्वज! शूलिन्! गंगाधर! मृड! मदनारे!
ॐ हर! शिव! शंकर! गौरीशं, वन्दे गंगाधरमीशम् ।

शिव रुद्रं पशुपतिमीशानं, कलये काशीपुरीनाथम् ॥
जय शम्भो! जय शम्भो! शिव! गौरीशंकर! जय शम्भो!॥

शिव! शिवेति शिवेति शिवेति वा,
हर! हरेति हरेति हरेति वा,
भव! भवेति भवेति भवेति वा,
मृड! मृडेति मृडेति मृडेति वा, ॥
ॐ भज मनः शिव मेव निरन्तरम् ॥
ॐ रट मनः शिव मेव निरन्तरम् ॥
ॐ स्मर मनः शिव मेव निरन्तरम् ॥
ॐ जप मनः शिव मेव निरन्तरम् ॥

२१.श्री शिवपंचाक्षरस्तोत्रम्

ॐ नागेन्द्रहाराय, त्रिलोचनाय, भस्मांगरागाय,
महेश्वराय ।
नित्याय, शुद्धाय, दिगम्बराय,
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥ १ ॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दन चर्चिताय,
नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय ।
मन्दारपुष्प, बहुपुष्प सुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥ २ ॥
शिवाय गौरी वदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाश्काय ।
श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शिव' काराय नमः शिवाय ॥ ३ ॥
वसिष्ठ कुम्भोदभ्वगौतमार्यमुनीन्द्रदेवाचर्चित शेखराय ।
चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥ ४ ॥
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाक हस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥ ५ ॥

पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ
शिवलोकमवाप्रोति शिवेन सह मोदते ॥ ६ ॥
इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं शिवपंचाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

अथ रूद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं।
चिदकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥१॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं।
गिरा ग्यानं गोतीतमीशं गिरीशं॥
करालं महाकाल कालं कृपालं।
गुणागार संसार पारं नतोऽहं ॥२॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गंभीरं।
मनोभूत कोटि पभा श्री शरीरं॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा।
लसभ्दालबालेन्दु कंठे भुजंगा॥३॥
चलत्कुंडलं भ्रु सुनेत्रं विशालं।
प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालुं॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं।
अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं॥
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं।
भजेऽहं भवानी पतिं भावगम्यं॥५॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी।
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी॥
चिदानंद संदोह मोहापहारी।
प्रसीदं प्रसीदं प्रभो मन्मथरी॥६॥

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं।
भजंतीह लोके परे वा नराणां।।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं।
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं।।७।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां।
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं।।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं।
प्रभे पाहि आपन्नमामीश शंभो।।८।।
रूद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।९।।

श्री शिव स्तोत्रम् "शाँति पाठ"

ओ३म् धौः शाँतिरन्तरिक्षँ गूँ-शाँतिः पृथिवी शाँतिरापः शाँतिरोषधयः शाँतिः । वनस्पतयः शाँतिर्विश्वे देवाः शाँति ब्रह्म शाँतिः सर्व गूंशाँतिः शाँतिःरेव शाँतिः सामा शाँतिरेधि । ॐ शाँतिः। शाँतिः। सर्वारिष्टि शाँति सुशाँतिर्भवतु ॥

-यजुर्वेद ३६/१७

२३.महामृत्युन्जय मंत्र :-

ॐ हों जूंसः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
ॐ सवः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ ॥

भावार्थः- हे तीनों लाकों के पालनकर्ता, व्याधिहर्ता, पोषणहार परमात्मा भगवान् शिव, पक्का फल जिस प्रकार उसके डंठल से अलग हो जाता है उसी प्रकार

रोग और मृत्यु से मुझे बचाना और मेरे जीवन को अमृतमय करना ।

मन्त्र लाभ :- १. यह मन्त्र जीवन प्रदान करता है, अकाल मृत्यु दुर्घटना इत्यादि से बचाता है ।

२. यह मन्त्र साँप और बिच्छु के काटने पर भी अपना पूरा प्रभाव रखता है ।

३. इस मन्त्र का महत्वपूर्ण लाभ है कठिन एवं असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त करना ।

४. यह मन्त्र हर बीमारी को भगाने का बड़ा शस्त्र है ।

२४.विभिन्न गायत्री मंत्र :-

रुद्रः गायत्री :- ॐ तत्पुरुषाये विध्महे, महारुद्राय धीमहि तन्नः रुद्रः प्रचोद्यात् ।

शिव गायत्री :- ॐ महादेवाय विद्महे रुद्रमूर्तये धीमहि तन्नः शिवः प्रचोद्यात ।

ब्रह्मा गायत्री :- ॐ चर्तुमुखाय विद्महे हंसा रुड़ाये धीमहि तन्नोः ब्रह्मा प्रचोद्यात् ।

विष्णु गायत्री :- १. ॐ नारायणाये विद्महे सह लक्ष्मी हंसारुड़ाये धीमहि तन्नो विष्णु प्रचोद्यात।

२. ॐ नारायनाये विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णु प्रचोद्यात् ।

लक्ष्मी गायत्री :- ॐ महा लक्ष्मये विद्महे, विष्णु प्रियायै धीमहि । तन्नो लक्ष्मीः प्रचोद्यात् ॥

प्रभाव :- महालक्ष्मीः मन्त्र धन, धान्य, ऐश्वर्य, आनन्द, व्यापार, पद्, यश, भौतिक सुख-सुबिधाएं, देने में समर्थ है । इनके उपासक दरिद्रता से छुटकारा पा लेते हैं ।

सरस्वती गायत्री :-

ॐ सरस्वत्यै विद्महे, ब्रह्मपुत्रये धीमहि ।

तन्नो सरस्वतीः प्रचोदयात् ॥

नोटः- हंसवाहिनी मां सरस्वती की उपासना से ज्ञान, विज्ञान, विवके, स्मरण शक्ति प्राप्त होती है ।

दुर्गा गायत्री :- ॐ महा देव्ये विध्महे दुर्गाये धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात ।

गौरी गायत्री :- ॐ गिरिजाये विदमहे शिव प्रियाये धीमहि तन्नो दुर्गः प्रचोदयात् ।

सूर्य गायत्री :- ॐ भास्कराय विदमहे, दिवाकराय धीमहि,। तन्नो सूर्य प्रचोदयात् ॥

राम गायत्री :- ॐ दशरथिये विदमहे सीता भल्वाये धीमहि तन्नो रामा प्रचोदयात् ।

सीता गायत्री :- ॐ जनकनन्दिन्यै विद्महे, भूमिजायै धीमहि । तन्नो सीताप्रचोदयात् ॥

तुलसी गायत्री :-ॐ श्री तुलस्यै विद्महे विष्णु प्रियाये धीमहि तन्नो वृन्दा प्रचोदयात् ॥

राधा गायत्री :- ॐ वृषभानुजाय विद्म्हे, कृष्णा प्रियायै ध ीमहि । तन्नो राधा प्रचोदयात् ॥

कृष्ण गायत्री :- ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि । तन्नोः कृष्णः प्रचोदयात् ॥

२७.पुत्र प्राप्ती के लिए मंत्र जप :-

पिता को गर्वाधारण के एक माह उपरान्त लगातार अगले आठ माह तक निम्न मंत्र जप कम से कम एक माला सुबह शाम अवश्य करनी चाहिए । हो सके तो कुछ काल तक माता भी इस मन्त्र का जाप करें ।

मंत्रः- *"ॐ क्लीं देवकी सुत गोविन्दम, वासुदेव जगत्पते। देहीमे तन्यं कृष्ण त्वहंशरणंगतः क्लीं ॐ।"*

नोटः- पुत्र प्राप्ती के इस मंत्र से माताओं को पुत्ररत्न की प्राप्ती होगी । परन्तु पुरुषों के हृदय में बाँके बिहारी जी प्रकट होंगे । शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से कम से कम एक माला सुबह शाम पीत वस्त्र एवं गले में तुलसी की माला धारण कर के जप शुरु करें। मंत्र जप करते समय पूर्ण रूप से शुचिता का पालन करना चाहिए ।

२६.वेद मंत्रः-

नमः शम्भवे च, मयो भवे च, नमः शंकराय च, मयस्कराय च, शिव तराय च, नमः शिवाय ।

प्रातः काल हाथ देखने का मंत्रः-

❖ *ॐ कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।*
करमूले तू गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम्

भूमि स्पर्श मंत्रः-

❖ ॐ समुद्र वसने देवि पर्वत स्तन मण्डिते ।
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यम पादस्पर्श क्षमस्व मे ।।

अन्नपूर्णः मंत्रः-

❖ ॐ अन्नपूर्णो सदा पूर्णो शंकर प्राण बल्लभे ।
ज्ञान वैराग्य सिद्धयं भिक्षां देहि च पार्वतिं ।।

गंगा मैया का मंत्रः-

❖ ॐ गांगवारी मनोहारी मुरारि चरण च्युतम ।
त्रिपुरारी शिरश्चारि, पापहारि पुनातुमाम ।
ॐ शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगतपिता ।
शीतले त्वं जगध्दात्री शीतलायै नमो नमः ।।

❖ ॐ काली काली महा काली कालिके परमेश्वरी ।
सर्वानन्द करीदेवी नारायणी सहस्रानि नमोऽस्तुते।।

चामुण्डेश्वरी मंत्र :-

❖ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥१॥

❖ ॐ लांकाय शांकरी देवी कामाक्षी काँचीपुरे ।
प्रजन्यं सिम्हले दुर्गी चामुण्डेश्वरी सहस्राणी नमोऽस्तुते॥२॥

❖ ॐ महादेवये विदमहे दुर्गाये धीमहि,
तन्नो देवी प्रचोद्यात ॥३॥

सरस्वती मंत्र :-

❖ ॐ नमस्ते शारदे देवी, काश्मीरपुर वासिनी ।
त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ॥१॥

❖ ॐ कम्भुकण्ठी शुतोम्रोष्ठी सर्वाभरण भूषिता ।
महासरस्वती देवी जिह्वाग्रे सन्निविश्यताम् ॥२॥

❖ ॐ सरस्वती मया दर्षटवा, वीणा पुस्तक धारिणी,
हंस वाहण सम्युक्ता, विद्यादानं च देहिमे ॥३॥

❖विष्णु भगवान से विद्या प्राप्ती का मन्त्र :-

ॐ विद्याँभयस्यता नित्यं जप्तव्या पुरुषोतमः

❖श्री महालक्ष्मी मन्त्रः-

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शंखचक्र गदाहस्ते महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ॥ १ ॥

❖महालक्ष्मी नमस्तुभ्यमं, नमस्तुभ्यमं सुरेश्वरी ।
हरि प्रिय नमस्तुभ्यमं, नमस्तुभ्यमं दयानिदे ॥ २ ॥

❖महालक्ष्मी चविदमहे, विष्णु पत्नी च दीमहे,
तन्नो लक्ष्मी प्रचोद्यात ॥ ३ ॥

कल्याणकारी मन्त्र :-

❖देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

शत्रु पर बिजय प्राप्ती मंत्र :-

❖ॐ रामः परशुरामश्च नशसिंहो विष्णुरेव च।
विक्रमश्चैवमादिनि, जप्यान्य रिजिभी षुभिः ॥

२७.भगवती सीता स्तुतिम्:-

❖सकल कुशल दात्रीं, भक्ति मुक्ति प्रदात्रीं ।
त्रिभुवन जनयित्रीं, दुष्टधीन शयित्रींम् ॥
जनक धारणि पुत्रीं, दर्पिदर्प पहत्रीं ।
हरिहर विधिकर्त्रीं, नौमि सदभक्त भत्रीमं ॥

अर्थात - मैं उन सीता माता की स्तुति करता हुँ, जो सर्व मंगलदायिनि हैं । यहाँ तक कि भक्ति और मुक्ति का भी दान करती हैं । जो त्रिभुवन की जननी तथा दुर्बुद्धि का नाश करने वाली हैं । जो राजा जनक की यज्ञ भूमि से प्रकट हुई थीं । जो अभिमानियों के गर्व को चूर-चूर कर देने वाली हैं । ब्रह्मा, विष्णु, महेश जी की भी जननी हैं और श्रेष्ठ भक्तों का पोषण करने वाली हैं। मैं उसी भगवती सीता माता को सहस्र बार नमस्कार करता हुँ ।

२८.एक श्लोकी रामायण

(एक ही श्लोक में सम्पूर्ण रामायण का वर्णन)

❖ ॐ आदौरामतपोवनादिगमनं हत्वता मृग कांचनं ।
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ॥
बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनम् ।
पश्चाद् रावणकुम्भकर्णहननं चैतद्धि रामायणम् ॥

२९.एक श्लोकी भागवत गीता

(एक ही शलोक में सम्पूर्ण श्री भागवत का वर्णन)

❖ ॐ आदौ देवकी गर्भजननं गोपीगृहे वर्द्धनोरुनम् ।
मायामण्डितपूतनाप्रहणनं गोवर्द्धनोद्धारणम् ॥
कंसछेदन कौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनम् ।
एतद् भागवतं पुराणकथितं श्री कृष्णलीलामृतम् ॥

३०.रामायाण के कुछ चम्तकारी मंत्र

➢ *"ॐ ह्रीं आपदाम पहर्तारं दातारं सर्व सम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीं रामं भूयो भूयो नमाम्यहम ॥"*

नोटः- इस मंत्र की बिना ओंठ हिलाए (मानसिक जप) एक माला नित्य करें तथा दिपावली के दिन सिद्ध करें। सिद्ध करने के बाद ८६४ आटे की गोलियां बनाकर बढ़ी दिपावली की शाम को मछलियों को चुगा देवें । सभी प्रकार के रोग, कल्ह, कलेश आदि से मुक्ति प्राप्त होगी ।

➢ *भर्जन भव बीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् ।*
तर्जनं यमदूतानां राम रामेति गर्जनम् ॥

➢ *रामो राज मणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे*
रामे णाभिहता निशाचर चमू रामाय तस्मै नमः।

➢ *रामान्नास्तिपरायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं*
रामे चित्रलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर॥

➢ *राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।*
सहस्र नाम ततुल्यं रामनाम वरानने ॥

➢ *रामायरामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।*
रघुनाथाय नाथाय सीता या पत्ये नमः ॥

➢ *श्री रामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि ।*
श्री रामचन्द्रचरणौ वचसा गणामि ।
श्री रामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि ।
श्री रामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥

➢ *शान्ताकारं भुजगगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।*
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्ण शुभांगम् ।

➢ *लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम् ।*
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।

➢ *सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।*
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभागभवेत्॥

३१.दोहा रुप में श्री भगवत प्रार्थना

मो सम दीन न दीनहित, तुम समान रघुबीर ।
अस विचारि रघुवंशमणि, हरहु विषम भव भीर ॥
कामहिं नारि पियारि जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमि दाम ।

तिमि रघुनाथ निरन्तर, प्रिय लागहु मोहि राम ॥
प्रणतपाल रघुवंशमणि, करुणा सिन्धु खरारि ।
गये शरण प्रभु राखिहै, सब अपराध बिसारि ॥
श्रवण सुयस सुनि आयहुं, प्रभु भंजन भव पीर ।
त्राहि त्राहि आरति हरण, शरण सुखद रघुवीर ॥
अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहऊँ निरवाण ।
जन्म-जन्म रति राम जी पद, यह वरदान न आन ॥
बार-बार वर मांगऊँ, हरषि देहु श्री रंग ।
पद सरोज अनपायिनी, भगति सदा सत्संग ॥
वरणि उमापति राम गुण, हरषि गए कैलाश ।
तब प्रभु कपिन दिवायहु, सब विधि सुख प्रद वास ॥
एक मन्द मैं मोहवश, कुटिल हृदय अज्ञान ।
पुनि प्रभु मोहिं विसारेउ, दीनबन्धु भगवान् ॥
विनती करि मुनि नाय सिर, कह कर जोरि बहोरि ।
चरण सरोरुह नाथ जनि, कबहुं तजै मति मोरि ॥
नहिं विद्या, नहिं बाहुबल, नहिं कछु खरचन दाम ।
मोसो पतित अपंग की, तुम पति राखौ राम ॥
एकछत्र इक मुकुटमणि, सब वर्णन पर जोउ ।
तुलसी रघुवर नाम के वर्ण विराजत दोउ ॥
क्हा कहौं छवि आजु की भले विराजे नाथ ।
तुलसी मस्तक तब नवे, जब धनुष बाण हो हाथ ॥
कित मुरली कित चन्द्रिका, कित गोपियन के साथ ।
अपने जन के कारणे, श्री कृष्ण भये रघुनाथ ॥
अवध धाम धामाधिपति, अवतारन राम ।
सकल सिद्धि पति जानकी, दासन पति हनुमान ॥
कर गहि धनुष चढ़ाइयो, चकित भये सब भूप ।
मगन भई श्री जानकी, देखि राम छवि रूप ॥
वृन्दावन सो वन नहीं, नन्द गाम सो गाम ।
बंशी बट सो बट नहीं, कृष्ण नाम सो नाम ॥
चलो सखी तहं जाइये, जहां बसे बृजराज ।

गोरस बेचत हरि मिले, एक पन्थ दोउ काज ॥
वृन्दावन की गैल में, मुक्ति परे बिलखाय ।
मुक्ति कहे गोपाल सों, मेरी मुक्ति बताय ॥
पड़ी रहो या गैल में, साधु सन्त चलि आय ।
उड़ि-उड़ि रज मस्तक लगे, सहज मुक्ति हो जाय ॥
राम बाम दिशि जानकी, लखण दाहिनी ओर ।
ध्यान सकल कल्याणमय, सुर तरु तुलसी तोर ॥
आस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारण रहित कृपाल ।
तुलसीदास सठ ताहि भज, छाड़ि कपट जंजाल ॥
गुरु मूरति मुख चन्द्रमा, सेवक नयन चकोर ।
आठ पहर निरखत रहुँ, गुरु मूरति की ओर ॥
एक घड़ी आधी घड़ी आधी से पुनि आध ।
तुलसी संगति साधु की, हरे कोटि अपराध ॥
सियावर रामचन्द्र की जय । अवधपति रामलला जी की जय । पवनसुत हनुमान जी की जय । उमापति महादेव जी की जय । रमापति रामचन्द्र जी की जय । वृन्दावन कृष्णचन्द्र जी की जय । बोलो भाई सब सन्तन की जय। अपने श्री गुरु गारेविन्द की जय । श्री दूधाधारी बर्फानी जी महराज की जय। सन्त शिरोमणि सन्त प्रभुदास जी महाराज की जय। संध्या आरती की जय। गौ माता की जय । गंगा मैया की जय । श्री जय जय सीता राम ।

३२.श्री महावीर हनुमान जी के चम्तकारी मन्त्रः-

निम्नलिखित मन्त्रों में वरनित महावीर हनुमान जी के बारह नामों का स्मरण करके घरसे निकलने पर प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है ।

❖ ॐ हनुमान अंजनी सुनुर्वायुपुत्रोमहांवलः
रामेष्टः फाल्गुण सखः, पिंगाक्षयोऽमित विक्रमः
उदधि क्रमण श्र्चैव, सीता शौक विनाशनः ।

लक्ष्मण प्राणदाता च दशग्रीवस्थ दर्पहा ॥
एवं द्वादश नामाति, कपिन्द्रस्य महात्मनः
स्वापकाले प्रबोधे च,यात्रा काले च या पठेत ॥
तस्य सर्वभयं नास्ति, रणेच विजयी भवेत,
राजद्वारे गह्वरे च भयंनास्ति कदाचनः ॥
——आनन्द रामायण

❖ ॐ हनुमते नमः, ॐ अंजनी सुताय नमः, ॐ वायु पुत्राय नमः, ॐ महबलि मारुति नन्दनाय नमः, ॐ रामेष्ट हनुमते नमः, ॐ फाल्गुण सखाये नमः, ॐ पिंगाक्षाय नमः, ॐ अमित विक्रमाय नमः, ॐ अवधिक्रमणाय नमः, ॐ सीताशोकविनाशकाय वीर हनुमते नमः, ॐ श्री लक्ष्मण प्राणदाता वीर हनुमते नमः, ॐ श्री दशग्रीव दर्पहः श्री हनुमते नमः, ॐ मंगल मूर्ति मारुति नन्दन, सकल अमंगल मूल निकन्दन ॥

❖ ॐ नमः भगवते अंजनिसुताये विद्महे, वायु पुत्राये धीमही, तन्नो मारुति प्रचोदयात् ॥

❖ ॐ नमः भगवते अंजनि सुताये महावलाये स्वाहः ! (११ बार)

३३.श्री हनुमान चालीसा

दोहाः- सरस्वति ने सुर दिया गुरु ने दिया है ज्ञान, मात पिता ने जन्म दिया, कर्म लिखे भगवान ॥
पवनसुत हनुमान की जय ।

श्री हनुमते नमः

दोहाः-श्रीगुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि ।
बरनउं रघुवर बिमल जस, जो दायक फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानि के, सुमिरौं पवन कुमार ।
बलबुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार ॥
❖जय हनुमान ज्ञान गुणसागर । जय सिया राम ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥ जय सिया राम ।
रामदूत अतुलित बल धामा । जय सिया राम ।

अंजनि पुत्र पवन सुत नामा ॥ जय सिया राम ।
कंचन वरन विराज सुवेसा । जय सिया राम ।
कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥ जय सिया राम ।
हाथ बज्र औ ध्वजा विराजै । जय सिया राम ।
कांधे मूँज जनेऊ साजै ॥ जय सिया राम ।
शंकर सुवन केशरीनन्दन । जय सिया राम ।
तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥ जय सिया राम ।
विद्यावान गुनी अति चातुर । जय सिया राम ।
राम काज करिबे को आतुर ॥ जय सिया राम ।
प्रभु चरित सुनिबे को रसिया । जय सिया राम ।
राम लखन सीता मन बसिया ॥ जय सिया राम ।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । जय सिया राम ।
विकट रूप धरि लंक जरावा ॥ जय सिया राम ।
भीम रूप धरि असुर संहारे । जय सिया राम ।
रामचन्द्र जी के काज संवारे ॥ जय सिया राम ।
लय संजीवन लखण जियाये । जय सिया राम ।
श्री रघुवीर हरषि उर लाये ॥ जय सिया राम । श्रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई । जय सिया राम ।
तुम मम प्रिय भरत सम भाई ॥ जय सिया राम ।
सहस बदन तुम्हरो यश गावैं । जय सिया राम ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥ जय सिया राम ।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । जय सिया राम ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥ जय सिया राम ।
जम कुबेर दिगपाल जहां ते । जय सिया राम ।
कबि कोबिद कहि सके कहा ते ॥जय सिया राम ।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । जय सिया राम ।
राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥ जय सिया राम ।
तुम्हारो मन्त्र बिभीषन जाना । जय सिया राम ।
लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥ जय सिया राम ।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू । जय सिया राम ।

लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥ जय सिया राम ।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जय सिया राम ।
जलधि लांघ गये अचरज नाहीं ॥ जय सिया राम ।
दुर्गम काज जगत के जेते । जय सिया राम ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ जय सिया राम ।
राम दुआरे तुम रखवारे । जय सिया राम ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥ जय सिया राम ।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । जय सिया राम ।
तुम रक्षक काहू को डरना ॥ जय सिया राम ।
आपन तेज सम्हारो आपै । जय सिया राम ।
तीनों लोक हांक ते कांपै ॥ जय सिया राम ।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै । जय सिया राम ।
महावीर जब नाम सुनावै ॥ जय सिया राम ।
नासै रोग हरै सब पीरा । जय सिया राम ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥ जय सिया राम ।
संकट से हनुमान छुड़ावै । जय सिया राम ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥ जय सिया राम ।
सब पर राम तपस्वी राजा । जय सिया राम ।
तिन के काज सकल तुम साजा ॥जय सिया राम ।
और मनोरथ जो कोई लावै । जय सिया राम ।
सोई अमित जीवन फल पावै ॥ जय सिया राम ।
चारों जुग परताप तुम्हारा । जय सिया राम ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥ जय सिया राम ।
साधु संत के तुम रखवारे । जय सिया राम ।
असुर निकन्दन राम दुलारे ॥ जय सिया राम ।
अष्टसिद्धि नौनिधि के दाता । जय सिया राम ।
अस वर दीन जानकी माता ॥ जय सिया राम ।
राम रसायन तुम्हरे पासा । जय सिया राम ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥ जय सिया राम ।
तुम्हरे भजन राम को पावैं । जय सिया राम ।

जनम जनम के दुःख बिसरावैं ॥ जय सिया राम ।
अन्त काल रघुवर पुर जाई । जय सिया राम ।
जहां जन्म हरि-भक्ति कहाई ॥ जय सिया राम ।
और देवता चित्त न धरई । जय सिया राम ।
हनुमत सेई सब कुछ करई ॥ जय सिया राम ।
संकट कटै मिटै सब पीरी । जय सिया राम ।
जो सुमिरै हनुमत बलवीरा ॥ जय सिया राम ।
जै जै जै हनुमान गुसाईं । जय सिया राम ।
कृपा करहु गुरु देवकी नाईं ॥ जय सिया राम ।
जो सत बार पाठ कर जोई । जय सिया राम ।
छूटहिं बंदि महा सुख होई ॥ जय सिया राम ।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा । जय सिया राम ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥ जय सिया राम ।
तुलसीदास सदा हरि चेरा । जय सिया राम ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥ जय सिया राम ।
दोहाः- पवनतय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ॥
राम लक्षण सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥
सियावर रामचन्द्र जी की जय।
पवन सुत हनुमान की जय।

३४.भगवती दुर्गा के कुछ विशेष मंत्रः-

❖'ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै
शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा'

(यह शापोद्धार मन्त्र कहलाता है । इस मन्त्र का कम से कम सात बार जाप करे ।)

अथ दुर्गाद्वात्रिंशन्नाम माला

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी ।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी ॥
दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा ।

दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला ॥
दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी ।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता ॥
दुर्गमज्ञान संस्थाना दुर्गमध्यान भासिनी ।
दुर्ग मोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थ स्वरूपिणी ॥
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी ।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गगम्या दुर्गमेश्वरी ॥
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी । नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः ॥
पठेत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः ।

३७.अथ सप्तश्लोकी दुर्गा

शिव उवाच -

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनी ।
कलौ हि कार्यसिद्धयर्थमुपायं ब्रूहि थन्नतः ॥

देवयुवाच -

शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम् ।
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते ॥

❖ ॐ अस्य श्रीदुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप् छनदः, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थ सपासप्रकीदुर्गापाठे विनियोगः ।

❖ *ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा बिलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥ १ ॥*

❖ *दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।*
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपरकारकरणाय सदार्द्रचिता ॥ २ ॥

❖ *सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥*

❖ *शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे । स्र्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥*

❖ *सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥*
❖ *रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ ६ ॥*
❖ *सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि । एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ ७ ॥*
इति श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्णा ॥

३६. अथ श्रीशिवताण्डवस्तोत्रम्

ॐ श्री गणेशाय नमः॥ जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले,
गलेऽवलम्बलम्बितां भुजंगतुगमालिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं,
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥१॥
जटाकटाहसंभ्रमन्निलिम्पनिझंरी,
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्जवलल्लापट्ट पावके,
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥२॥
धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धबन्धुर,
स्फुरद्उश्गन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकक्ष्घोरणीं निरुद्धर्धरापदि,
कवचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥३॥
जटाभुजंगपिंगलस्फुरत्फणामणिप्रभा,
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्कधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुत्वगुत्तरीयमेदुरे,
मनो विनोदमछ्भुतु बिभर्तु भूतभर्तरि ॥४॥
सहस्त्रलोचनप्रभुत्यशेषलेखशेखर
प्रसुनधूलिधीरणी विधूसराधि पीठभू ।
भुजंगराजमालया निगद्धजाटजूटकः

श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥५॥
ललाटचत्व रज्ज्वलद्धनंजयस्फुलिंगभा-
निपीतपंचसायकं नमन्निलिम्पनायकम! ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखम्
महाकपालिसम्पदे शिरोजटालमस्तु न ॥६॥
करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्जबल-
द्धनंजयाहुतीकृत प्रचंडपंचसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥७॥
नवीनमेघमंडली निरुंद्धदुर्धरस्फुरत्
कहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः ।
निलिप्मनिर्झरीधरस्तनोतु कृतिसिन्धुरः
कलानिधानवन्धुरः श्रिय जगद्धुनन्धरः ॥८॥
प्रफुल्लनीलपङ् कजप्रपंकालिभप्रभा
वलम्बिकंठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं-
गजच्छिदान्धकच्छिदन्तमन्तकच्छिदां भजे ।९।
अखर्वसर्वमंगलाकलाकदम्बमंजरी-
रसाप्रवाहमाधुरुविजश्म्भणामधुब्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकन्तमन्तकान्तक भजे ।१०।
जयत्यदभ्रविभ्रमस्फुरद्भुजंगमृवसद्
विनिर्गमक्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिन्धिमिन्धिमिन्ध्वनमृदंगतुंगमंगल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तित प्रचंडतांडवः शिवः ॥११॥
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजंगमौक्तिकस्त्रजो-
वमुक्तदुर्मतिः सदा शिर स्थमंजलिबहन् ।
विलोललोल लोचनो ललामभाललग्नकः॥१२॥
शिवेतिमन्त्रमुच्चरन् सदा (कदा) सुखी भवाभ्यहम् ।१३।
इदं हि नित्यमेव मुक्त मुत्तमोत्तम स्त

पठन् स्मरन् ब्रुवन्नरो विशुद्धि मेति संततम् ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथागतिं
विमोहर्न हि देहिनां सुशंकरस्य चिन्तनम् ।१४।
पूजाऽवसान समये दशवक्त्रगीतम्।
यः शम्भू पूजनपरं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्र तुरंगयुक्तां
लक्ष्मी सदैवसुमुखीं प्रददाति शम्भू ॥१५॥
निलिम्प नाथ नागरो कदम्ब मौलिमल्लिका
निगुम्फनिर्झरक्षरन्मधूष्णिका मनोहरः ।
तनोतुनो मनोमुदं विनोदिनीमहर्निशं
परिश्रमः परं पदं तदंगजत्विषां व यः ॥१६॥
प्रचण्डवाडवानलप्रभाशुभ प्रचारिणी
महाषसिद्धि कामिनीजनावहूतजल्पना ।
विमुक्तवामलोंचना विवाह कालिकध्वनिः
शिवेति मन्त्रभूषणा जगज्जयायाजायताम् ॥१७॥
मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वरी, यत पूजितं मयादेवी परि पूरनं तदस्वमे ॥

पृष्ठ सं० ६ का शेषः-

देवताओं की प्रार्थना तथा दक्षको क्षमा-दान

दक्षयज्ञ में रूद्रगणों द्वारा पराजित किये जाने से व्यथित मुनि और देवता ब्रह्मजी अपने पुत्र दक्षका सिर यज्ञकुण्ड में भस्म होने के कारण पुत्र शोक में व्याकुल थे। तदनन्तर देवताओं और मुनियों को साथ लेकर ब्रह्मजी भगवान् विष्णु के पास गये।

ब्रह्माजी ने भगवान विष्णु से कहा—प्रभो! भगवान रूद्रके आदेश से शिवगणों ने देवताओं का अंग—भंग कर दिया तथा दक्षता सिर यज्ञ—कुण्ड में भस्म करके उनके यज्ञ को नष्ट भ्रष्ट कर डाला। देव! जिस प्रकार से यज्ञ पूर्ण हो, दक्ष तथा उनके

ऋत्त्विवक् का जीवित हो जायँ और सारे मुनि एवं देवता सुखी हो जायँ–वैसा उपाय कीजिए। रमानाथ! हम सभी लोग आपकी शरण में आये हैं।

भगवान विष्णु ने कहा –विधाता! समस्त देवता और मुनि भगवान शिव के अपराधी, क्योंकि इन लोगोंने उन्हें यज्ञका भाग नहीं दिया। अब तुम लोग शुद्ध हृदय से शीघ्र प्रसन्न होनेवाले उन्हीं भगवान् महेश्वरको प्रसन्न करने का यत्न करो। वे क्षणमात्र में कुपित होकर सम्पूर्ण जगत को नष्ट कर देते हैं। इस समय वे भगवानमहादेव अपनी प्राणवल्लभा सति के वियोग से दुःखी हैं। दुरात्मा दक्षने अपने दुर्वचनरूपी बाणोंसे उनके हृदयको पहले ही घायल कर दिया है। तुमलोग शीघ्र ही जाकर उनसे अपने अपराधों के लिये चमा माँगो। भगवान् शंकर आशुतोष हैं। वे अपने जनोंद्वारा अपने प्रति किये गये अपराधका खयाल न कर उन्हें क्षमा कर देते हैं। मैं भी तुम लोगों के साथ भगवान् शिवके निवासपर चलूँगा और तुम्हारे लिए उनसे क्षमा माँगूँगा।

तदन्तर श्रीहरि सबको साथ लेकर भगवान् शिव के पवित्र कैलास धाम कैलास गये । कैलासपर परम रमणीय दिव्य वटवृक्ष के नीचे सबने भगवान् शंकर को विराजमान देखा। शिवभक्ति में तत्पर रहने वाले सनकादि ऋषि प्रसन्नतापूर्वक महेश्वरकी सेवामें बैठे हुए थे। भगवान् शिवका श्रीविग्रह परम शान्त दिखायी देता था। भस्म आदिसे उनके अंगों की बड़ी शोभा हो रही थी।

इस दिव्य रूप में महेश्वरका दर्शन करके विष्णुसहित सभी देवताओंने हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया और उनकी स्तुति करते हुए वे कहने लगे महेश्वर आप सम्पूर्ण सृष्टिके आदि कारण हैं! आपके भयसे वायु चलती है, सूर्य तपसे तथा मृत्यु संहार करती है। हे परमेश्वर! हमलोग अत्यन्त दुःखी एवं दीन होकर आपकी

शरण में आये हैं। आप हमारी रक्षा कीजिये। आप शीघ्र कृपाकरके दक्षके अपूर्ण यज्ञ को पूर्णकर उसे जीवनदान दीजिए। भगकी आँखें, पूषाके दाँत, भृगुकी दाढ़ी–मूँछ तथ देवताओं के अंग पूर्ववत् ठीक हो जायँ। हे नाथ! यज्ञकर्म पूर्ण होने पर जो कुछ शेष रहे, वह सम्पूर्ण आपका भाग हो। ऐसा कहते हुए देवता और मुनिगण महेश्वर के चरणों में दण्ड के समान पड़ गये।

महादेवजी प्रसन्न हो कर बोले– दक्ष यज्ञका विनाश मेरे द्वारा नहीं हुआ। दक्ष स्वयं दूसरों से द्वेष करता था। दूसरों के प्रति किया गया बर्ताव ही अपने लिए फलित होता है। अतः ऐसा कर्म कभी नहीं करना चाहिये जो दूसरों को कष्ट देता हो। दक्षका विनाश उसके अहंकारद्वारा हुआ है। दूसरों के प्रति किया गया उसका द्वेष ही उसके संहारका कारण बना। मैं बालक समझकर उसके अपराधको क्षमा करता हूँ। भगवान् शिवने ऐसा कहकर देवताओं और मुनियोंके अंग ठीक कर दिये तथा दक्षके सिरकी जगह बकरेका सिर जोड़कर उसे जीवनदान दिया और दक्ष–यज्ञको सम्पन्न करा दिया। इस प्रकार भगवान् शिव का कोप भी करूणका कारण बना। महेश्वरके संहारके पीछे भी उनकी दयाका असीम सागर लहराता रहता है।

भगवान शिव आरती

ऊँ जय शिव ओंकारा स्वामी जय शिव ओंकारा
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव अर्द्धांगी धरा, ऊँ हर हर हर महादेव।
एकानन, चतुरानन, पंचानन राजे
हंसासन, गरूडासन, वृषवाहन साझे
ऊँ हर हर हर माहादेव
दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज अति सोहे
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जग मोहे, ऊँ हर हर हर महादेव।
अक्षमाला, वनमाला, रूडमाला धारी
चन्दन मृगमद लेपन भाले शशि धारी
ऊँ हर हर हर महादेव
श्वेताम्बर, पीताम्बर, बागाम्बर अंगे
सनाकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे, ऊँ हर हर हर महादेव।
लक्ष्मीवर, सावित्री, पार्वती अंगे
अर्द्धांगी शिव गंगे शिव गौरां संगे, ऊँ हर हर हर महादेव।
कर के मध्य कमन्डल चक्र त्रिशूल धरता
जग करता जग हरता जग पालन करता, ऊँ हर हर हर महादेव।
चौसठ जोगिनि मंगल गावत नृत्य करत भैंरों
बाजत ताल मृदंग और बाजत डमरू, ऊँ हर हर हर महादेव।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव जानत अविवेका
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका, ऊँ हर हर हर महादेव।
काशी मे विश्वनाथ विराजत नन्दा ब्रह्मचारी
नित उठ भोग लगावत महिमा अति भारी, ऊँ हर हर हर महादेव।
त्रिगुणातीत की आरती जो कोई नर गावे
कहत शिवानन्द स्वामी मन वाँच्छित फल पावे
ऊँ हर हर हर महादेव।

।। इति श्री ।।
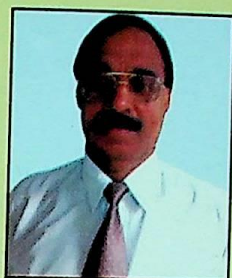
विध्या सागर शर्मा

जन्मः- २७.२.१९५४ (१५ फाल्गुण २०१०)

जन्म स्थलः-धर्मसाल (राजौरी)

शिक्षाः- एम.एस.सी., एम.एड., डी.वी.एम.

पुसतक लेखनः-

१.लद्धाख एण्ड हिमालियाज़,(अंग्रेजी)

२. कारगिल हिमालियाज़ (अंग्रेजी)

३. जम्मु पर्यटन एवं दर्शन (हिन्दी)

४. वीर-भद्रेश्वर महिमा (हिन्दी)

कृतित्वः-जम्मु काश्मीर की स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं जैसे योजना, शिराजा, लोऽआदि में लेखन, दूरदर्शन तथा आकाशवानी से वार्ताएं, हिन्दी, डोगरी, पहाड़ी में कविता पाठ।

सम्मानः-''अवन्तिका'–राष्ट्रीय-संघ द्वारा — डॉ.एस.राधाकृष्णन सम्मान

व्यवसायः-शिक्षा विभाग में प्रधानाचार्य तथा जवाहर नवोदया विद्यालय (जे.एन.वी.) के पूर्व प्रधानाचार्य ।

ॐ नमः शिवायः

श्री वीरभद्राय नमः

समस्ता पब्लिकेशनस् (रजि.)
जम्मू-2